ISMAIL NATIONAL MAHILA PG COLLEGE, MEERUT

(Affiliated with C.C.S University, Meerut, formerly Meerut University)

NAAC Accredited A Grade College

Summary Sheet

Criteria	Criteria 03 - Research Innovation and Extension
Key Indicator	Research Publications & Awards
Metric No.	3.3.2 Number of research papers per teachers in the Journals notified on UGC website during the year.
Response	

Dr. Huma Masood

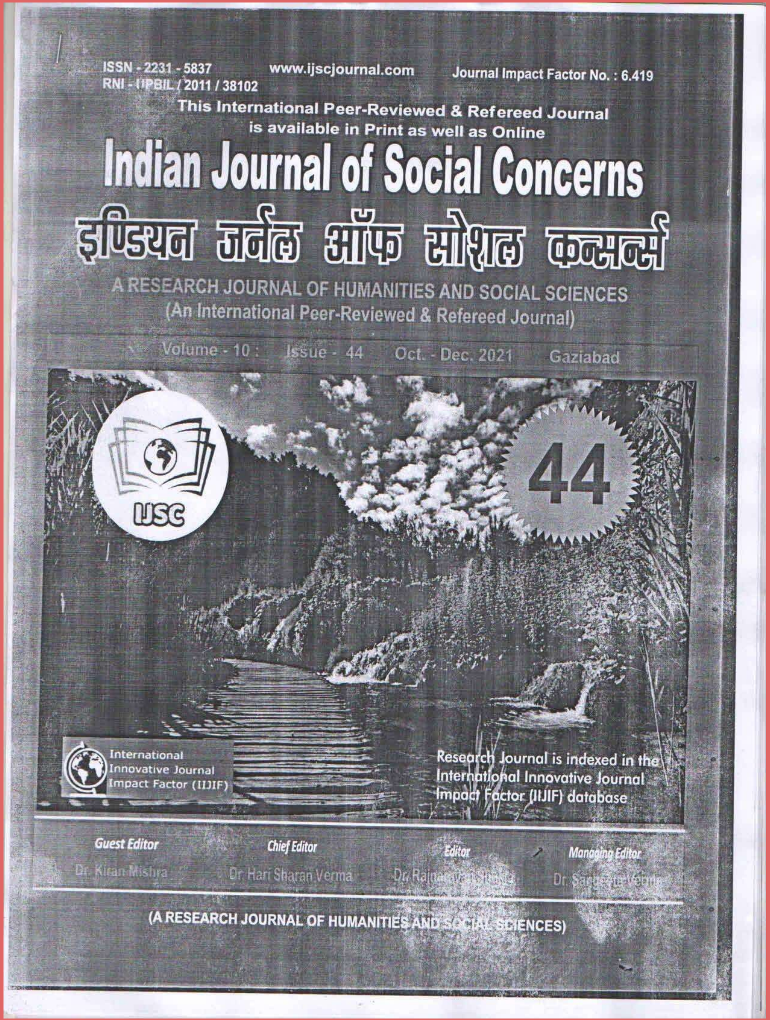

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	लेखक	पृष्ठ स.
45. "बौद्ध धर्म दर्शन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता"	डॉ0 रजत गंगवार	168–171
46. Ecotourism Industry In The World For Resources Conflicts And Environmental Preservation	Dr. Vinai Kumar Shanna and Dr. Amit Agrawal	172–176
47. "फर्रुखाबाद के वंगश नबाब एवं 1857 की क्रान्ति में उनकी भूमिका"	डॉ0 रजत गंगवार	177–181
48. Construction of Integrated Indian Market By Goods And Services Tax (gst)	Dr. Vinai Kumar Shanna and Dr. Amit Agrawal	182–185
49. काव्य में सौंदर्य विषयक दृष्टिकोण	डॉ0 अर्चना शर्मा	186–189
50. इस्माईल मेरठी की नज़्मों में आचार्य कौटिलय के नैतिक तत्त्वों का वर्णन	डॉ0 हुमा मसूद	190–195
51. Human Rights, Its Evolutions And Role of Human Rights Commission of India	Dr. Renu Chaudhary	196–197
52. वील्होजी की सामाजिक चेतना	सुषमा भारद्वाज	198–199
53. सादा जीवन उच्च विचार के विग्रह : देशरत्न	डॉ0 राजेंद्र प्रसाद, डॉ0 पुष्पा रानी	200–201
54. कालिदास के काव्यों में राजनीतिक संबंधी मंत्रिपरिषद् संगठन	सरोज	202–203
55. 'विवेकानन्द का जीवन–दर्शन एव संदेश	डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय	204–206
56. अभिज्ञानशाकुन्तलम और रघुवंश में विवाह	सरोज	207–208
57. कोशिश कहने की' गज़ल संग्रह की समीक्षा	डॉ० प्रवेश कुमारी	209–210
58. "Environmental Imbalance: Policy and Challenge"	Dr. Vimla Devi	211–213
59. भारतीयसमाजे नारीणां वैशिष्ट्यम्	डॉ0 पूनम रानी	214–215
60. लेखिका–डॉ0 आरती लोकेश	डॉ0 निधि अग्रवाल–पुस्तक समीक्षक	216–216

50

इस्माईल मेरठी की नज़्मों में आचार्य कौटिलय के नैतिक तत्त्वों का वर्णन

डॉ0 हुमा मसूद

सारांश–

ज़िन्दगी का मज़हर "शब्द" है, ज़िन्दगी के इज़हार का ज़रिया "शब्द" है, ज़िन्दगी की इन्तिहा "शब्द" है और "शब्द" एक निर्माता है। ज़िन्दगी आगे बढ़ी तो इन्सान की सूरत में पैदा हुई। ज्ञान ज़रिया बना इन्सान और हैवान में फ़र्क़ करने का। यह ज्ञान सीना–ब–सीना होता हुआ जब नस्लों तक पहुँचा तो तहरीर की शक्ल इख़्तियार की। सीना–ब–सीना पहुँने वाली मालूमात के मुकाबले में तहरीर ने न सिर्फ़ अमूल्य वृद्धि की बल्कि ज्ञान जीवन की वो सच्चाई बनकर उभरा जिसकी बदौलत कागज़ और कलम की महत्ता बढ़ी। लिखा हुआ शब्द बोले हुए शब्द से ज़्यादा ज्ञान के ख़ज़ाने में वृद्धि का सब्ब बना जो लिखा न जा सका वो मौजूद भी न रह सका। शब्द कल भी अमूल्य थे और हमारा मार्ग दर्शन कर रहे थे। और आज भी हमारी राहों को तारीकी से दूर कर रहे हैं। शब्द एक ऐसा इतिहास रचते हैं जिसकी रोशनी में हम आसानी से आगे का मार्ग तय कर सकते हैं।

जैसे–जैसे ज्ञान बढ़ा कारामद मालूमात हासिल करना आसान हुआ। यह काम धर्म का हो या दुनिया का दोनों को हासिल करने अनुभवों के साथ–साथ शोध करने के लिए हिम्मत, हौसला, मेहनत और लगन का होना ज़रूरी है। इन सबके साथ–साथ खुलुस शामिल ना हो तो ज्ञान में वृद्धि नहीं हो सकती। इस हक़ीकत से इन्कार मुमकिन नहीं जब जब ज्ञान बढ़ा और फैला समाज में बदलाव आया।

"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" इस पुरानी कहावत की महत्ता और अर्थ से हम आज भी इन्कार नहीं कर सकते। क्योंकि मनुश्य जिस समाज में जीवन व्यतीत करता है उसी से हर चीज़ सीखता है और कभी भी खुद को समाज से अलग नहीं कर सकता। यह समाज ही चरित्र को बनाता, निखारता और संवारता है तो वह सही शब्दों में इन्सान बनाता है। राजनीतिज्ञ हो या दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक हो या इतिहासकार कवि हो या लेखक आदि हर एक का जीवन उसकी परवरिश इसी समाज में सम्भव है। यह अलग बात है कि इन्होंने अलग अलग ढंग से मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि की है। जीवन के उतार चढ़ाव से प्रभावित होकर जीवन की सच्चाईयां परत दर परत उनपर खुलती जाती हैं। उनकी ज़िन्दगी में प्रतिदिन हमेशा और हर लम्हा बदलाव आते रहते हैं। जब हम सृष्टि के इतिहास पर नज़र डालते हैं तो यह बात खुलकर सामने आ जाती है कि यूनान, मिस्त्र, रोम इरान व अरब की सभ्यता हो या सिन्ध आर्य, बुद्धमत, हड़प्पा और मोहन जोदड़ों की सभ्यता आदि। यह सब उन्नति पाकर इन्सानी ज़िन्दगियों में इस हद तक रच बस गई कि उनका रूख़ ही बदल डाला। हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जहां इन सभी सभ्यताओं का संगम नजर आता है। कौसर मज़हरी के अनुसार–

'दूसरे मुल्कों की तहज़ीबों की तरह हिन्दुस्तानी तहज़ीब में बदलाव होते रहे हैं और मुख़्तलिफ तहज़ीबों के धारे इसमें आकर मिलते रहे हैं। हर समाज में कई माशरती तहें होती हैं जो अपने अन्दर अपनी ख़ासी तहज़ीबें लिए होती हैं।"[1]

इन तहज़ीबों के प्रभाव हम उन पलों में खोज सकते हैं जो एक इतिहास सृजित कर गये। यह गौरवपूर्ण इतिहास हमारा आर्दश, मार्गदर्शक ही नहीं बल्कि प्रेरणा का स्रोत्र था और आज भी भारतीय समाज के लिये एक महत्व रखता है। ऐसा ही एक बहुआयामी व्यक्तित्व आचार्य चाणक्य का है। उन्होनें जो कहा वह इतिहास तो बना ही, आज भी उसकी महत्ता में कमी नहीं। उनका कहा हुआ एक एक शब्द आज भी हमारा मार्ग दर्शक है, उनकी "चाणक्य नीति" उनके राजनीति के सिद्धान्त एक महान राष्ट्र के निर्माण में आज भी उपयोगी हैं। जिसे जानकर कोई भी जीवन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। आचार्य चाणक्य ने विभिन्न विषयों पर जो कुछ कहा वह सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक व कुटनीतिक, धार्मिक हो या लोक व्यवहार से संबंधित अपने अनुभवों की रौशनी में कहा। जिनकी प्रसगिंता से इन्कार नहीं। वह कल भी महत्वपूर्ण व उपयोगी थे और आज भी हम उनसे अमूल्य फ़ायदा उठाकर सफ़लता प्राप्त कर सकते हैं। आपके मुंह से निकले शब्द किस तरह चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। इस बात का अन्दाज़ा आचार्य के प्रेरणाप्रद सूत्रों से बाआसानी लगाया जा सकता है। यह सूत्र चरित्र बनाते हैं। चरित्र बनता है अमल से, अमल आता है ज्ञान से, ज्ञान मिलता है ज्ञानी लोगों या गुरू की अच्छी शिक्षा व अच्छी सोहबत से। गुरू के हृदय में स्थित विद्या को सेवाकर एक शिश्य किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। इस पर आचार्या ने निम्न शब्दों में प्रकाश डाला है–

"खनित्वा हि खनित्रेण भूतले वारि विन्दति
तथा गुरूगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति"[2]

जिस प्रकार खुदाई करने वाला व्यक्ति पृथ्वी के

Dr. Deepti Kaushik

ISSN 2229-6751

RUMINATIONS

A Peer-Reviewed Bi-Annual International Journal for Analysis and Research in Humanities and Social Sciences

Abstracted & Indexed at- Ulrich, USA

Vol. 12 No. 2 DECEMBER, 2021

Website: ruminationssociety.com

IMPACT FACTOR : 5.25

I2OR WORLD of JOURNALS

COSMOS IMPACT FACTOR

Patrons :
Bhagat Singh Koshyari
Governor, Maharashtra State
Dr. Vinod Kumar Singh
Vice-Chancellor
Maharaja Ganga Singh University, Bikaner, Rajasthan
Dr. Ami Upadhyay
Vice-Chancellor,
Dr. Babasaheb Ambedkar Open University, Ahmedabad
Editor-in-Chief :
Dr. Ram Sharma
Members Editorial Board :
Dr. Elisabetta Marino (University di Roma, Italy)
Dr. Carolyn Heising (Iowa State University, Iowa, USA)
Dr. Andre Kukla (University of Toronto, Canada)
Dr. Diane M. Rousseau, USA
Dr. Alberto Testa, Argentina
Frank Joussen, Germany
Dr. M. Rajaram
Assistant Professor of English,
M.V. Muthiah Govt. Arts College for Women, Dindigul-624 001
Bill Ashcroft Faha
Professor Emeritus School of the Arts and Media
UNSW Sydney 2052 Australia
Dr. Terry Beitzel
Director, Mahatma Gandhi Center for Global Nonviolence and Professor of Justice Studies.
James Madison University, Harrisonburg, VA 23807 USA
Mrs. Vassilakou Evangelia
The English Academy of Languages, Greece
Dr. H.S. Bhakuni
Asso. Prof., Dept. of History, M.B.(P.G.) College, Haldwani, Nainital, U.K.

ISSN 2229-6751

9 772229 675000

CONTENT

1. Indian Economy and Mutual Funds : Its Impact
- Dr. Gajendra Kumar
2. इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास 'नीलकंठी ब्रज' और 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' में प्रस्तुत नारी केन्द्रिक समस्या 17
- किरण कलिता
3. Role of Technology in Higher Education 31
- Dr. Ravinder Kumar
4. जनजातीय विवाह के विभिन्न प्रकार 39
- डा. रूमा साह
5. Bravery! Thy Name is Women: A Study of Steinbeck's Wartime Women Characters 49
- Anchal
6. Domestic Violence and Its Theatrical Representation 57
- Shivam Singh, Professor Gunjan Sushil
7. Edgar Allan Poe's Science Fiction: A Study 66
- Dr. Tushti Sharma, Pragya
8. A Study of Life giving Force in Anantha Murthy's Samskara 71
- Dr. Mahendra Kumar
9. A Faminist Study of Margaret Atwood's The Edible Woman and Mary Mccarthy's The Company She Keeps 78
- Yajush Kajla
10. Aravind Adiga's The White Tiger: Survival of the Fittest 86
- Neeraj Tyagi, R.K. Sharma

6/14

11. Perception of Extrasensory Potentials being Affected by Spiritual Practices 95
- Jwalant Bhavsar, Chitra Kashyap
12. Edward Albee's "Tiny Alice": Testament of Existentialism 114
- Prof. Dr. Charu Mehrotra
13. "Role of Patients : A Study of Patients in the Meerut Hospitals" 129
- Dr. Deepti Kaushik, Vishal Kumar Lodhi

7/14

"ROLE OF PATIENTS : A STUDY OF PATIENTS IN THE MEERUT HOSPITALS"

DR. DEEPTI KAUSHIK
Associate Professor & Head, Dept. of Sociology,
I.N. (P.G.) College, Meerut
VISHAL KUMAR LODHI
Research Scholar, Dept. of Sociology
I.N. (P.G.) College, Meerut

The role of the patient likewise depends on the conception the physician hold of the patient's role. According to parsons the patient is expected to recognize that being sick is unpleasant and that he or she has an obligation to get well by seeking the physician's help. The patient physician role relationship is therefore not spontaneous from of social interaction. It is a well-defined encounter consisting of two or more persons whose objects is the health of a single individual. It is also a situation that is too important to be left of undefined forms of hebaviour, stable and predictable manner. The patient-physician relationship is intended by society to be therapeutic in nature. The patient has a need for technical services from the physician, and the physician is the technical expert who is qualified and and defined by society as prepared to help the patient. The goal of the patient-physician encounter is thus to promote some significant change for the better in the patients' health. (Cockerham, 1998 : 151).

Although the patient-physician relationship involves mutuality in the form of bahavioural expectations, the status and power of the parties are not equal. The role of the physician is based upon an

Dr. Shivali Agarwal

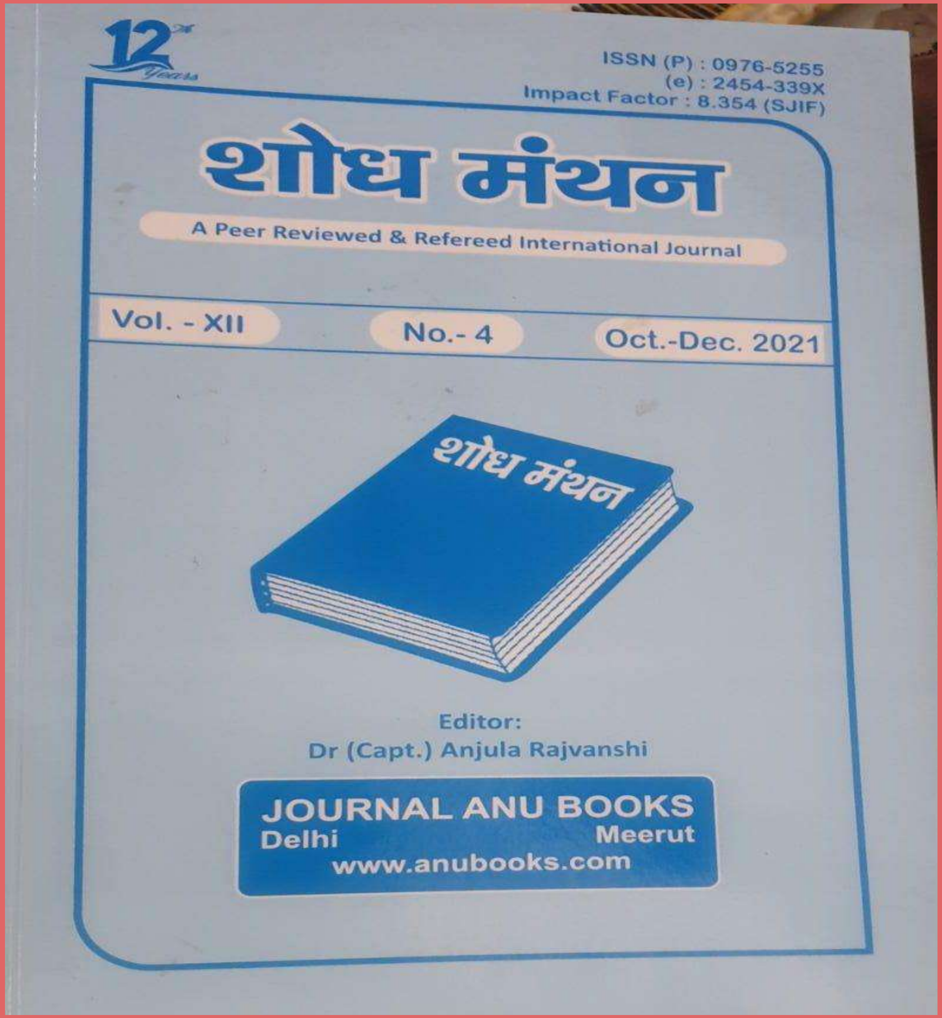

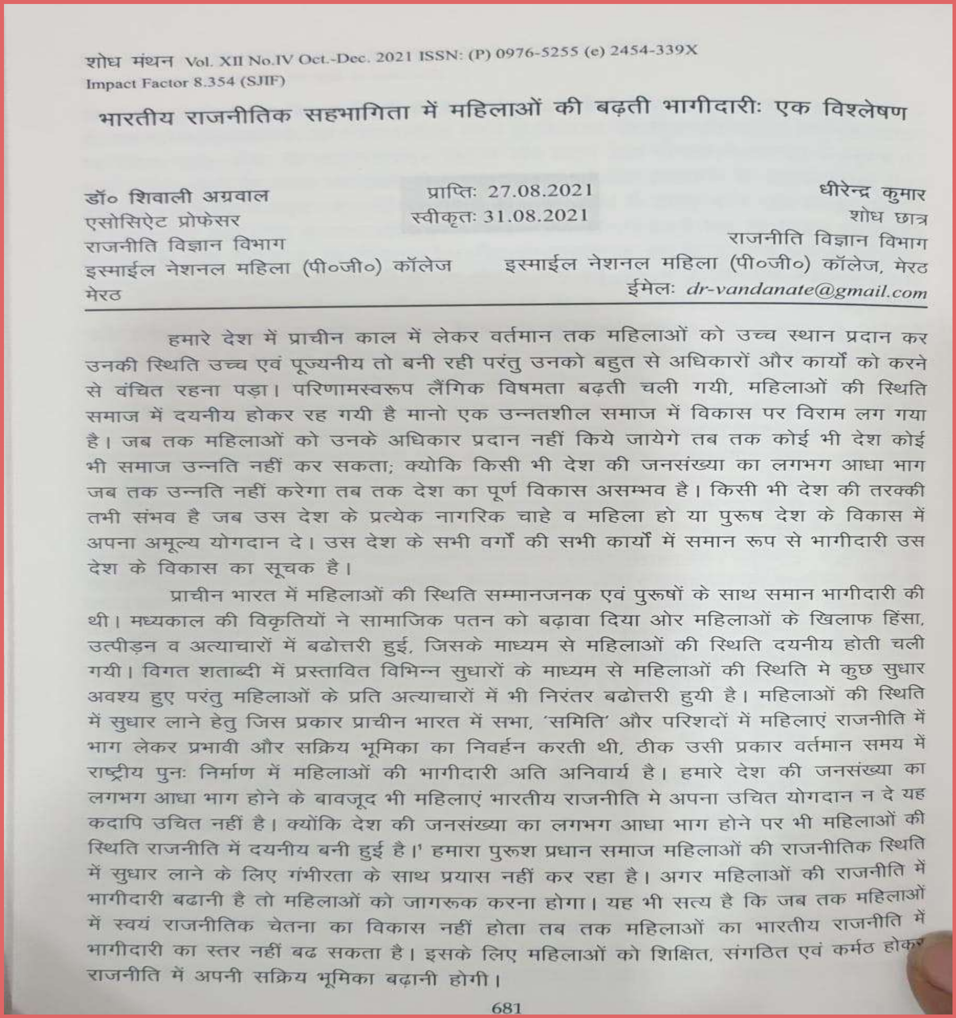

शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

भारतीय राजनीतिक सहभागिता में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी: एक विश्लेषण

डॉ० शिवाली अग्रवाल
एसोसिऐट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
इस्माईल नेशनल महिला (पी०जी०) कॉलेज
मेरठ

प्राप्तिः 27.08.2021
स्वीकृतः 31.08.2021

धीरेन्द्र कुमार
शोध छात्र
राजनीति विज्ञान विभाग
इस्माईल नेशनल महिला (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *dr-vandanate@gmail.com*

हमारे देश में प्राचीन काल में लेकर वर्तमान तक महिलाओं को उच्च स्थान प्रदान कर उनकी स्थिति उच्च एवं पूज्यनीय तो बनी रही परंतु उनको बहुत से अधिकारों और कार्यों को करने से वंचित रहना पड़ा। परिणामस्वरूप लैंगिक विषमता बढ़ती चली गयी, महिलाओं की स्थिति समाज में दयनीय होकर रह गयी है मानो एक उन्नतशील समाज में विकास पर विराम लग गया है। जब तक महिलाओं को उनके अधिकार प्रदान नहीं किये जायेगे तब तक कोई भी देश कोई भी समाज उन्नति नहीं कर सकता; क्योकि किसी भी देश की जनसंख्या का लगभग आधा भाग जब तक उन्नति नहीं करेगा तब तक देश का पूर्ण विकास असम्भव है। किसी भी देश की तरक्की तभी संभव है जब उस देश के प्रत्येक नागरिक चाहे व महिला हो या पुरूष देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे। उस देश के सभी वर्गों की सभी कार्यों में समान रूप से भागीदारी उस देश के विकास का सूचक है।

प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक एवं पुरूषों के साथ समान भागीदारी की थी। मध्यकाल की विकृतियों ने सामाजिक पतन को बढ़ावा दिया ओर महिलाओं के खिलाफ हिंसा, उत्पीड़न व अत्याचारों में बढोत्तरी हुई, जिसके माध्यम से महिलाओं की स्थिति दयनीय होती चली गयी। विगत शताब्दी में प्रस्तावित विभिन्न सुधारों के माध्यम से महिलाओं की स्थिति मे कुछ सुधार अवश्य हुए परंतु महिलाओं के प्रति अत्याचारों में भी निरंतर बढोत्तरी हुयी है। महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने हेतु जिस प्रकार प्राचीन भारत में सभा, 'समिति' और परिशदों में महिलाएं राजनीति में भाग लेकर प्रभावी और सक्रिय भूमिका का निवर्हन करती थी, ठीक उसी प्रकार वर्तमान समय में राष्ट्रीय पुनः निर्माण में महिलाओं की भागीदारी अति अनिवार्य है। हमारे देश की जनसंख्या का लगभग आधा भाग होने के बावजूद भी महिलाएं भारतीय राजनीति मे अपना उचित योगदान न दे यह कदापि उचित नहीं है। क्योंकि देश की जनसंख्या का लगभग आधा भाग होने पर भी महिलाओं की स्थिति राजनीति में दयनीय बनी हुई है।[1] हमारा पुरूश प्रधान समाज महिलाओं की राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने के लिए गंभीरता के साथ प्रयास नहीं कर रहा है। अगर महिलाओं की राजनीति में भागीदारी बढानी है तो महिलाओं को जागरूक करना होगा। यह भी सत्य है कि जब तक महिलाओं में स्वयं राजनीतिक चेतना का विकास नहीं होता तब तक महिलाओं का भारतीय राजनीति में भागीदारी का स्तर नहीं बढ सकता है। इसके लिए महिलाओं को शिक्षित, संगठित एवं कर्मठ होकर राजनीति में अपनी सक्रिय भूमिका बढ़ानी होगी।

Dr. Shivali Agarwal

ISSN: (P) : 0976-5255 (e) : 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

शोध मंथन

हिन्दी शोध पत्रिका

A Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi

Vol. XII No. IV Oct.-Dec. 2021

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

अनुक्रमणिका

78. सरदार पटेल और साम्प्रदायिक सद्भाव
डॉ० माईकल 526
79. भारतीय दर्शन में मानव अधिकार की अवधारणा
डा० वन्दना उप्रेती 534
80. रूद्रप्रयाग के प्रमुख धार्मिक स्थलों का विश्लेषण
डॉ० नन्दलाल 541
81. महिला पंचायती नेतृत्व और महिला सशक्तिकरण का समाजशास्त्रीय विश्लेषण
अंजू यादव, डॉ० करन सिंह चौहान 548
82. उत्तराखण्ड में वर्ण आधारित व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अवलोकन
डॉ० संजय कुमार पन्त 552
83. नवीन राष्ट्र शिक्षा नीति 2020 एवम् विकास की राह (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)
डॉ० अंचल गुप्ता 558
84. विज्ञापनों में महिलाओं के चित्रण के प्रति उत्तरदाताओं की धारणा : एक अनुभवजन्य अध्ययन
डॉ० मीनाक्षी हुड्डा, सुमित 565
85. भारत मे मानवीय अधिकारों की परम्परा मुख्य चुनौतियां तथा समाधान
डॉ० निरंजन शर्मा 572
86. भारतीय सांगीतिक वाद्य और उनका प्रयोग
डा० अनीता कश्यप 581

101. उत्तर प्रदेश के राजनीतिक दल और भारतीय जनता पार्टी का उद्भव एवं विकास
अनूप सिंह 664
102. कोविड–19 महामारी का मलिन बस्तियों पर प्रभाव
अरविन्द कुमार यादव 670
103. मनुष्यता को बचाये रखने की कोशिश
रश्मि नरताम 675
104. भारतीय राजनीतिक सहभागिता में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी: एक विश्लेषण
डॉ० शिवाली अग्रवाल, धीरेन्द्र कुमार 681
105. भारत व पर्वतीय राज्य: एक विहंगावलोकन
डा० महेन्द्र कुमार शर्मा 686
106. वर्तमान परिपेक्ष्य में उत्तर प्रदेश में बाल श्रम के रोकथाम में सहायक सरकारी नीतियाँ
प्रवीन कुमार 692
107. भारतीय महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिबा फूले का योगदान
निर्मला 696

Dr. Deepa Tyagi

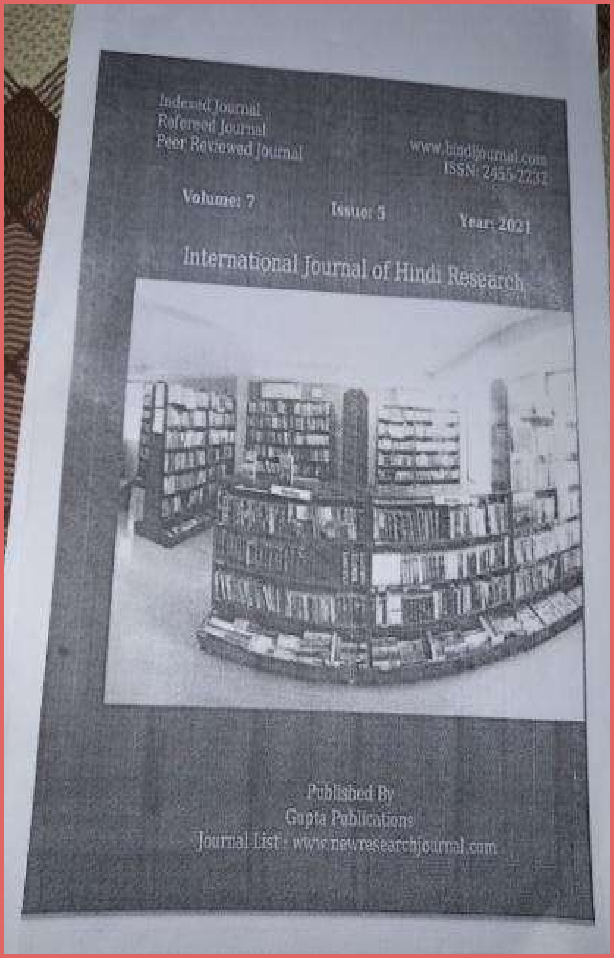

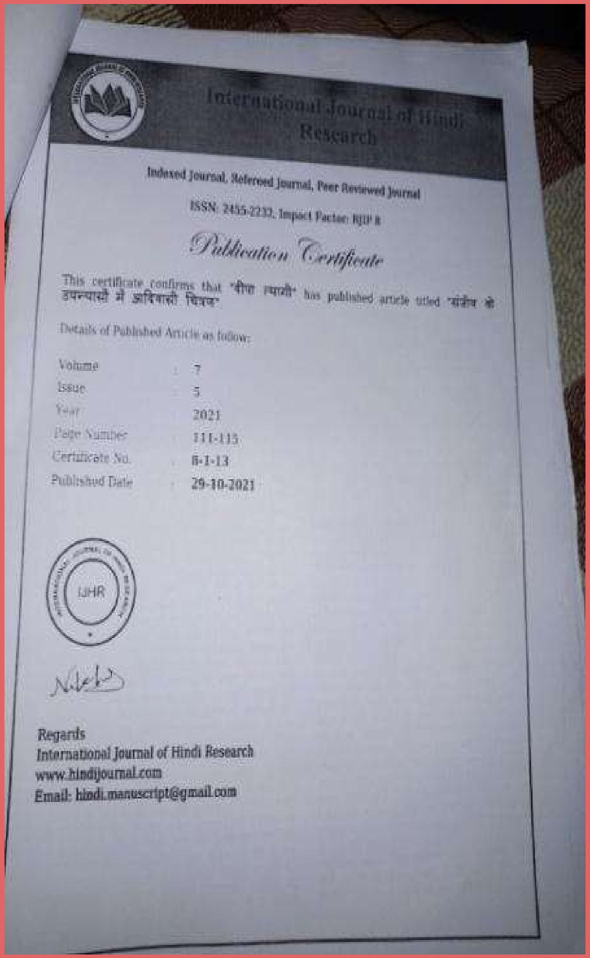

International Journal of Hindi Research

Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 8

Publication Certificate

This certificate confirms that "दीपा त्यागी" has published article titled "संजीव के उपन्यासों में आदिवासी चित्रण"

Details of Published Article as follow:

Volume	:	7
Issue	:	5
Year	:	2021
Page Number	:	111-115
Certificate No.	:	8-1-13
Published Date	:	29-10-2021

Regards
International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
Email: hindi.manuscript@gmail.com

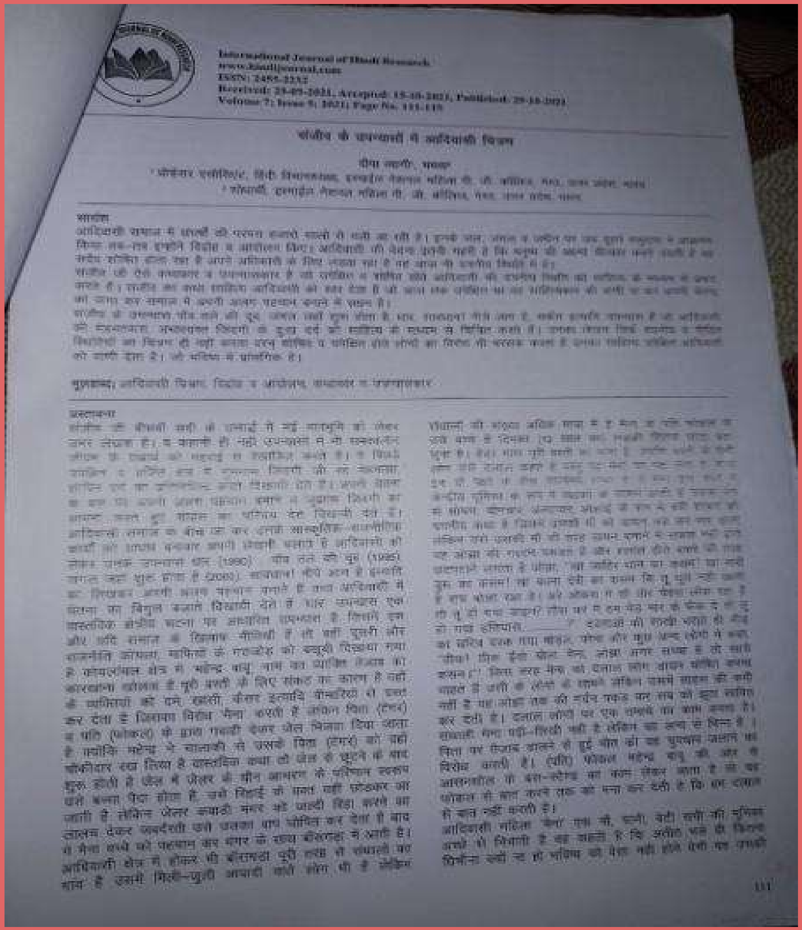

International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-09-2021, Accepted: 15-10-2021, Published: 29-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 111-115

संजीव के उपन्यासों में आदिवासी चित्रण

दीपा त्यागी

Dr. Deepa Tyagi

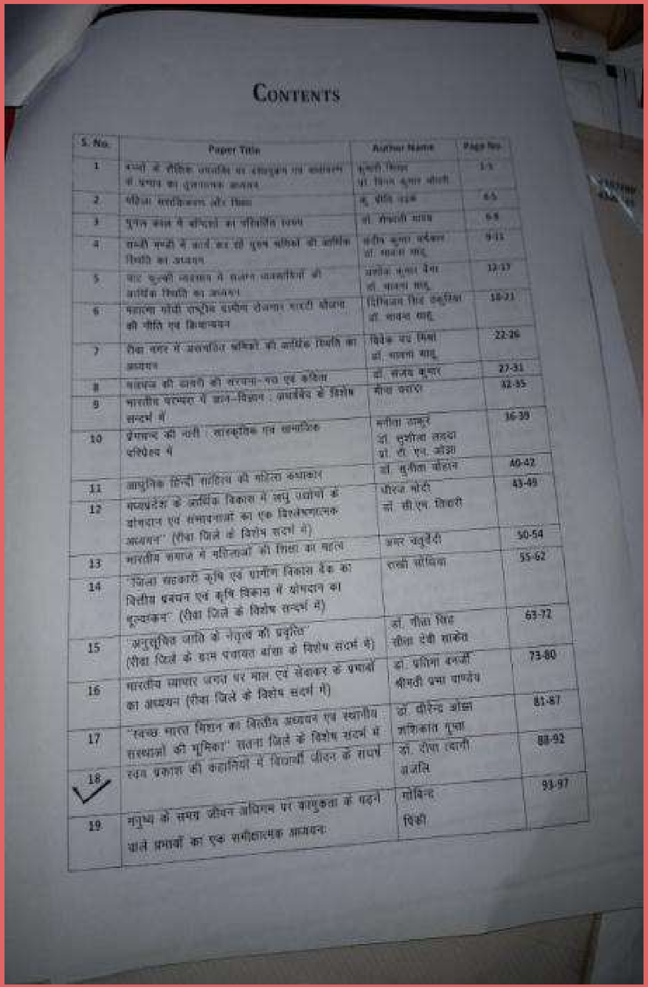

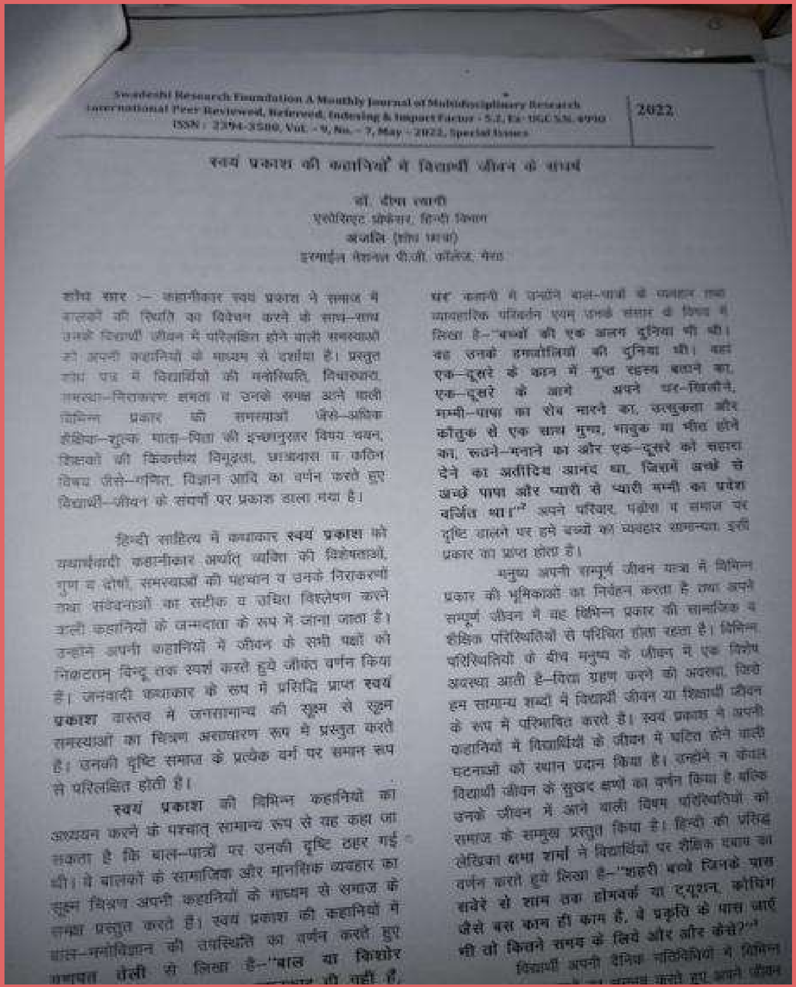

Dr. Reena Gupta

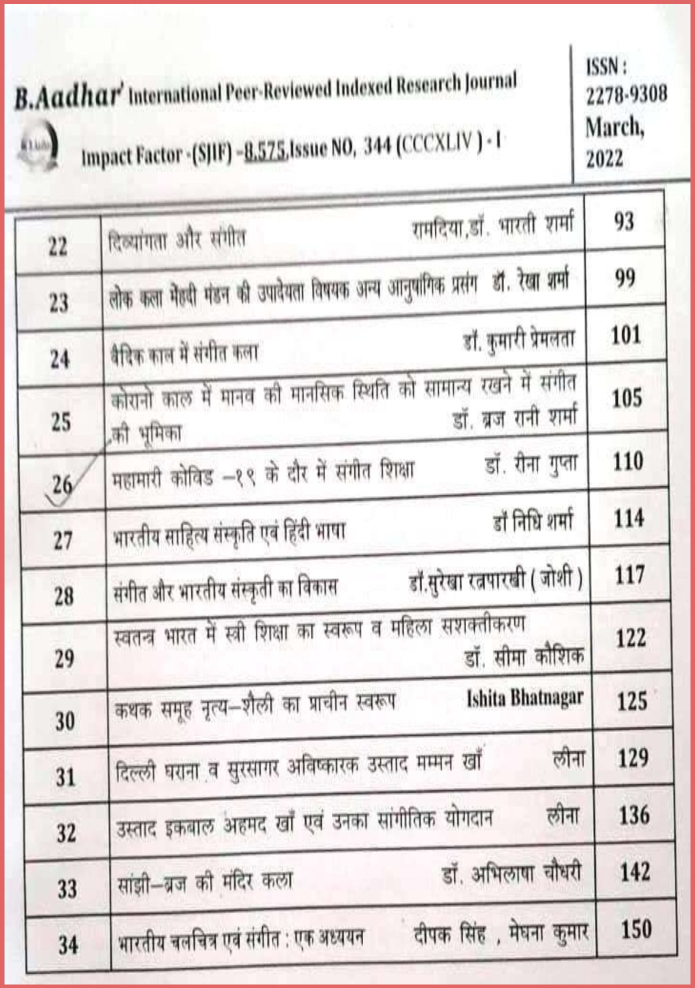

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575,Issue NO, 344 (CCCXLIV) - I
ISSN : 2278-9308 March, 2022

22	दिव्यांगता और संगीत	रामदिया,डॉ. भारती शर्मा	93
23	लोक कला मेंहदी मंडन की उपादेयता विषयक अन्य आनुषांगिक प्रसंग	डॉ. रेखा शर्मा	99
24	वैदिक काल में संगीत कला	डॉ. कुमारी प्रेमलता	101
25	कोरानो काल में मानव की मानसिक स्थिति को सामान्य रखने में संगीत की भूमिका	डॉ. ब्रज रानी शर्मा	105
26	महामारी कोविड –१९ के दौर में संगीत शिक्षा	डॉ. रीना गुप्ता	110
27	भारतीय साहित्य संस्कृति एवं हिंदी भाषा	डॉ निधि शर्मा	114
28	संगीत और भारतीय संस्कृती का विकास	डॉ.सुरेखा रत्नपारखी (जोशी)	117
29	स्वतन्त्र भारत में स्त्री शिक्षा का स्वरूप व महिला सशक्तीकरण	डॉ. सीमा कौशिक	122
30	कथक समूह नृत्य–शैली का प्राचीन स्वरूप	Ishita Bhatnagar	125
31	दिल्ली घराना व सुरसागर अविष्कारक उस्ताद मम्मन खाँ	लीना	129
32	उस्ताद इकबाल अहमद खाँ एवं उनका सांगीतिक योगदान	लीना	136
33	सांझी–ब्रज की मंदिर कला	डॉ. अभिलाषा चौधरी	142
34	भारतीय चलचित्र एवं संगीत : एक अध्ययन	दीपक सिंह , मेघना कुमार	150

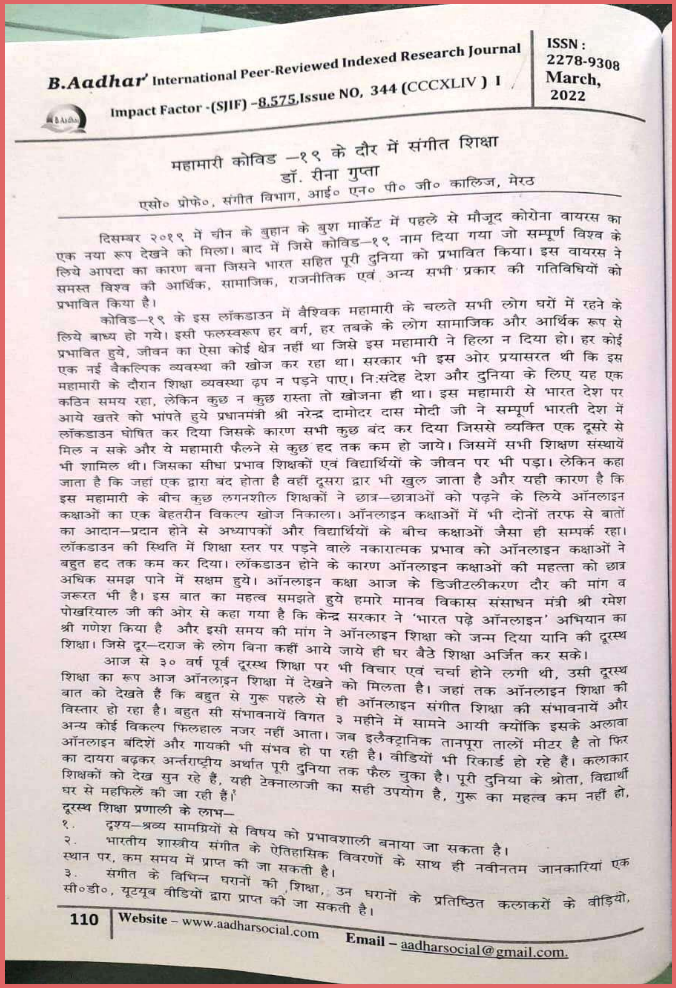

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575,Issue NO, 344 (CCCXLIV) I
ISSN : 2278-9308 March, 2022

महामारी कोविड –१९ के दौर में संगीत शिक्षा

डॉ. रीना गुप्ता
एसो० प्रोफे०, संगीत विभाग, आई० एन० पी० जी० कालिज, मेरठ

दिसम्बर २०१९ में चीन के बुहान के बुश मार्केट में पहले से मौजूद कोरोना वायरस का एक नया रूप देखने को मिला। बाद में जिसे कोविड–१९ नाम दिया गया जो सम्पूर्ण विश्व के लिये आपदा का कारण बना जिसने भारत सहित पूरी दुनिया को प्रभावित किया। इस वायरस ने समस्त विश्व की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं अन्य सभी प्रकार की गतिविधियों को प्रभावित किया है।

कोविड–१९ के इस लॉकडाउन में वैश्विक महामारी के चलते सभी लोग घरों में रहने के लिये बाध्य हो गये। इसी फलस्वरूप हर वर्ग, हर तबके के लोग सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभावित हुये, जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जिसे इस महामारी ने हिला न दिया हो। हर कोई एक नई वैकल्पिक व्यवस्था की खोज कर रहा था। सरकार भी इस ओर प्रयासरत थी कि इस महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था ढ़प न पड़ने पाए। नि:संदेह देश और दुनिया के लिए यह एक कठिन समय रहा, लेकिन कुछ न कुछ रास्ता तो खोजना ही था। इस महामारी से भारत देश पर आये खतरे को भांपते हुये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी ने सम्पूर्ण भारती देश में लॉकडाउन घोषित कर दिया जिसके कारण सभी कुछ बंद कर दिया जिससे व्यक्ति एक दूसरे से मिल न सके और ये महामारी फैलने से कुछ हद तक कम हो जाये। जिसमें सभी शिक्षण संस्थायें भी शामिल थी। जिसका सीधा प्रभाव शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के जीवन पर भी पड़ा। लेकिन कहा जाता है कि जहां एक द्वारा बंद होता है वहीं दूसरा द्वार भी खुल जाता है और यही कारण है कि इस महामारी के बीच कुछ लगनशील शिक्षकों ने छात्र–छात्राओं को पढ़ने के लिये ऑनलाइन कक्षाओं का एक बेहतरीन विकल्प खोज निकाला। ऑनलाइन कक्षाओं में भी दोनों तरफ से बातों का आदान–प्रदान होने से अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच कक्षाओं जैसा ही सम्पर्क रहा। लॉकडाउन की स्थिति में शिक्षा स्तर पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को ऑनलाइन कक्षाओं ने बहुत हद तक कम कर दिया। लॉकडाउन होने के कारण ऑनलाइन कक्षाओं की महत्ता को छात्र अधिक समझ पाने में सक्षम हुये। ऑनलाइन कक्षा आज के डिजीटलीकरण दौर की मांग व जरूरत भी है। इस बात का महत्व समझते हुये हमारे मानव विकास संसाधन मंत्री श्री रमेश पोखरियाल जी की ओर से कहा गया है कि केन्द्र सरकार ने 'भारत पढ़े ऑनलाइन' अभियान का श्री गणेश किया है और इसी समय की मांग ने ऑनलाइन शिक्षा को जन्म दिया यानि की दूरस्थ शिक्षा। जिसे दूर–दराज के लोग बिना कहीं आये जाये ही घर बैठे शिक्षा अर्जित कर सके।

आज से ३० वर्ष पूर्व दूरस्थ शिक्षा पर भी विचार एवं चर्चा होने लगी थी, उसी दूरस्थ शिक्षा का रूप आज ऑनलाइन शिक्षा में देखने को मिलता है। जहां तक ऑनलाइन शिक्षा की बात को देखते हैं कि बहुत से गुरू पहले से ही ऑनलाइन संगीत शिक्षा की संभावनायें और विस्तार हो रहा है। बहुत सी संभावनायें विगत ३ महीने में सामने आयी क्योंकि इसके अलावा अन्य कोई विकल्प फिलहाल नजर नहीं आता। जब इलैक्ट्रानिक तानपूरा तालों मीटर है तो फिर ऑनलाइन बंदिशें और गायकी भी संभव हो पा रही है। वीडियों भी रिकार्ड हो रहे हैं। कलाकार का दायरा बढ़कर अर्न्तराष्ट्रीय अर्थात पूरी दुनिया तक फैल चुका है। पूरी दुनिया के श्रोता, विद्यार्थी शिक्षकों को देख सुन रहे हैं, यही टेक्नालाजी का सही उपयोग है, गुरू का महत्व कम नहीं हो, घर से महफिलें की जा रही हैं।[1]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लाभ–

१. दृश्य–श्रव्य सामग्रियों से विषय को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

२. भारतीय शास्त्रीय संगीत के ऐतिहासिक विवरणों के साथ ही नवीनतम जानकारियां एक स्थान पर, कम समय में प्राप्त की जा सकती है।

३. संगीत के विभिन्न घरानों की शिक्षा, उन घरानों के प्रतिष्ठित कलाकरों के वीड़ियो, सी०डी०, यूटयूब वीडियों द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

Dr. Mamta Gautam

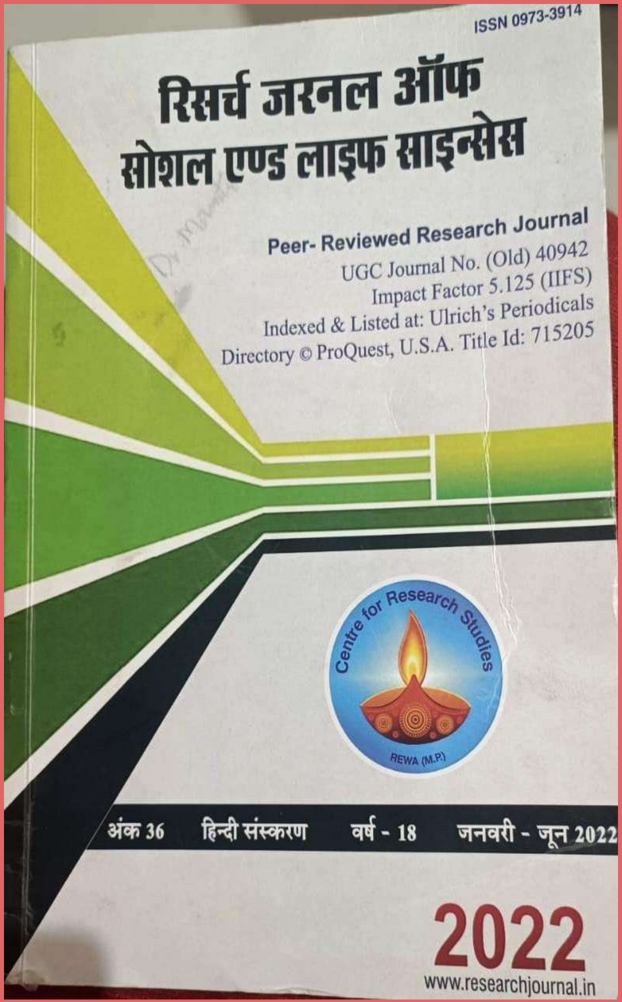

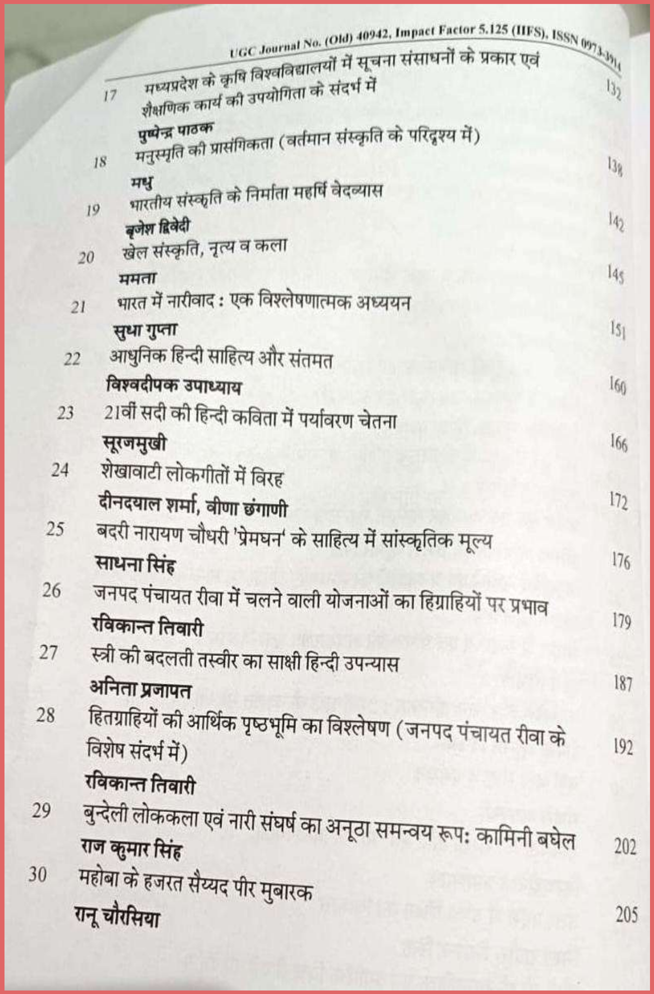

17 मध्यप्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में सूचना संसाधनों के प्रकार एवं शैक्षणिक कार्य की उपयोगिता के संदर्भ में 132
पुष्पेन्द्र पाठक

18 मनुस्मृति की प्रासंगिकता (वर्तमान संस्कृति के परिदृश्य में) 138
मधु

19 भारतीय संस्कृति के निर्माता महर्षि वेदव्यास 142
बृजेश द्विवेदी

20 खेल संस्कृति, नृत्य व कला 145
ममता

21 भारत में नारीवाद : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 151
सुधा गुप्ता

22 आधुनिक हिन्दी साहित्य और संतमत 160
विश्वदीपक उपाध्याय

23 21वीं सदी की हिन्दी कविता में पर्यावरण चेतना 166
सूरजमुखी

24 शेखावाटी लोकगीतों में विरह 172
दीनदयाल शर्मा, वीणा छंगाणी

25 बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' के साहित्य में सांस्कृतिक मूल्य 176
साधना सिंह

26 जनपद पंचायत रीवा में चलने वाली योजनाओं का हिग्राहियों पर प्रभाव 179
रविकान्त तिवारी

27 स्त्री की बदलती तस्वीर का साक्षी हिन्दी उपन्यास 187
अनिता प्रजापत

28 हितग्राहियों की आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण (जनपद पंचायत रीवा के विशेष संदर्भ में) 192
रविकान्त तिवारी

29 बुन्देली लोककला एवं नारी संघर्ष का अनूठा समन्वय रूप: कामिनी बघेल 202
राज कुमार सिंह

30 महोबा के हजरत सैय्यद पीर मुबारक 205
रानू चौरसिया

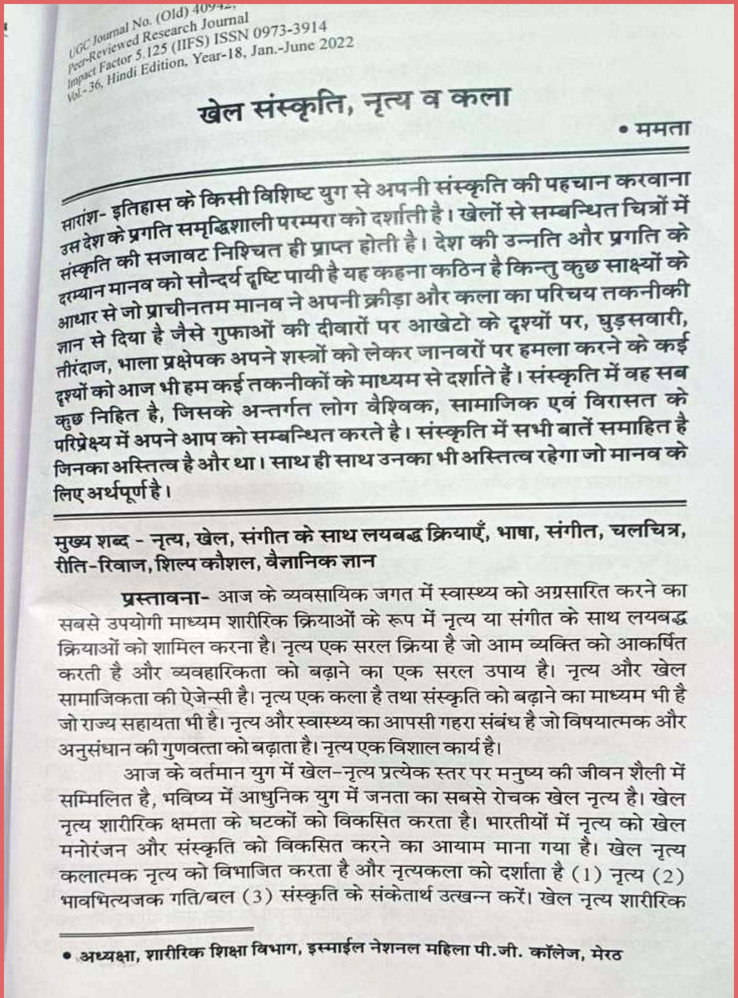
UGC Journal No. (Old) 40942,
Peer-Reviewed Research Journal
Impact Factor 5.125 (IIFS) ISSN 0973-3914
Vol.-36, Hindi Edition, Year-18, Jan.-June 2022

खेल संस्कृति, नृत्य व कला

• ममता

सारांश- इतिहास के किसी विशिष्ट युग से अपनी संस्कृति की पहचान करवाना उस देश के प्रगति समृद्धिशाली परम्परा को दर्शाती है। खेलों से सम्बन्धित चित्रों में संस्कृति की सजावट निश्चित ही प्राप्त होती है। देश की उन्नति और प्रगति के दरम्यान मानव को सौन्दर्य दृष्टि पायी है यह कहना कठिन है किन्तु कुछ साक्ष्यों के आधार से जो प्राचीनतम मानव ने अपनी क्रीड़ा और कला का परिचय तकनीकी ज्ञान से दिया है जैसे गुफाओं की दीवारों पर आखेटो के दृश्यों पर, घुड़सवारी, तीरंदाज, भाला प्रक्षेपक अपने शस्त्रों को लेकर जानवरों पर हमला करने के कई दृश्यों को आज भी हम कई तकनीकों के माध्यम से दर्शाते हैं। संस्कृति में वह सब कुछ निहित है, जिसके अन्तर्गत लोग वैश्विक, सामाजिक एवं विरासत के परिप्रेक्ष्य में अपने आप को सम्बन्धित करते है। संस्कृति में सभी बातें समाहित है जिनका अस्तित्व है और था। साथ ही साथ उनका भी अस्तित्व रहेगा जो मानव के लिए अर्थपूर्ण है।

मुख्य शब्द - नृत्य, खेल, संगीत के साथ लयबद्ध क्रियाएँ, भाषा, संगीत, चलचित्र, रीति-रिवाज, शिल्प कौशल, वैज्ञानिक ज्ञान

प्रस्तावना- आज के व्यवसायिक जगत में स्वास्थ्य को अग्रसारित करने का सबसे उपयोगी माध्यम शारीरिक क्रियाओं के रूप में नृत्य या संगीत के साथ लयबद्ध क्रियाओं को शामिल करना है। नृत्य एक सरल क्रिया है जो आम व्यक्ति को आकर्षित करती है और व्यवहारिकता को बढ़ाने का एक सरल उपाय है। नृत्य और खेल सामाजिकता की ऐजेन्सी है। नृत्य एक कला है तथा संस्कृति को बढ़ाने का माध्यम भी है जो राज्य सहायता भी है। नृत्य और स्वास्थ्य का आपसी गहरा संबंध है जो विषयात्मक और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाता है। नृत्य एक विशाल कार्य है।

आज के वर्तमान युग में खेल-नृत्य प्रत्येक स्तर पर मनुष्य की जीवन शैली में सम्मिलित है, भविष्य में आधुनिक युग में जनता का सबसे रोचक खेल नृत्य है। खेल नृत्य शारीरिक क्षमता के घटकों को विकसित करता है। भारतीयों में नृत्य को खेल मनोरंजन और संस्कृति को विकसित करने का आयाम माना गया है। खेल नृत्य कलात्मक नृत्य को विभाजित करता है और नृत्यकला को दर्शाता है (1) नृत्य (2) भावभित्यजक गति/बल (3) संस्कृति के संकेतार्थ उत्खन्न करें। खेल नृत्य शारीरिक

• अध्यक्षा, शारीरिक शिक्षा विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पी.जी. कॉलेज, मेरठ

Dr. Vineta

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कॉलेज के छात्रों के बीच बड़े पांच व्यक्तित्व और स्वास्थ्य की मुखरता का अध्ययन

Dr. Vineta, Assistant Professor Department of Psychology,

Ismail National Mahila P.G College Meerut.

सार

भारत अपनी जातीय और सांस्कृतिक व वधता के लए जाना जाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के वकास, भावनात्मक बु द्धमत्ता, समायोजन, सामाजिक-समर्थक व्यवहार, मान सक स्वास्थ्य पर जातीयता और वर्ग का काफी प्रभाव पड़ता है। जाति समाज में व्यक्ति की स्थिति और स्थिति निर्धारित करती है। इसका समग्र रूप से व्यक्ति के जीवन और आसपास के अन्य लोगों के साथ संबंधों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भू मका निभाता है और व्यक्ति की सफलता का पूर्वसूचक होता है। अध्ययनों से पता चला है क व्यक्तित्व और शैक्ष णक उपलब्धि, करियर की परिपक्वता, करियर की प्राथ मकताएं, भावनात्मक बु द्धमत्ता आदि के बीच संबंध है। बिग फाइव पर्सनै लटी मॉडल को अच्छी तरह से शो धत अवधारणा मॉडल माना जाता है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों लक्षण होते हैं। वर्तमान शोध पत्र का उद्देश्य वश्व वद्यालय के छात्रों के बीच बिग फाइव पर्सनै लटी पर सामाजिक भेदभाव के प्रभाव को निर्धारित करना है। अध्ययन के लए इस्तेमाल कए गए नमूने में स्तरीकृत यादृच्छिक तकनीक के माध्यम से दो वश्व वद्यालयों से चुने गए 100 (50 ओपन-मेरिट और 50 एससी) पीजी छात्र शा मल थे। डेटा संग्रह के उद्देश्य के लए इस्तेमाल कया जाने वाला उपकरण कोस्टा और मैकक्रे की बिग फाइव पर्सनै लटी प्रश्नावली (एनईओ- एफएफआई- 3) था। माध्य और t-परीक्षण का उपयोग करके डेटा का वश्लेषण कया गया था। बिग फाइव पर्सनै लटी के व क्षप्तता, खुलेपन और कर्तव्यनिष्ठा कारकों पर, ओपन-मेरिट और अनुसू चत जाति वश्व वद्यालय के छात्रों के बीच नगण्य अंतर पाया गया। बिग फाइव पर्सनै लटी के बहिर्मुखता और सहमतता कारकों पर ओपन-मेरिट और एससी छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

कुंजी शब्द : सामाजिक भेदभाव, बिग फाइव पर्सनै लटी मॉडल

प्रस्तावना

वश्व वद्यालय शक्षा को सीखने का अंतिम चरण माना जाता है। यह हायर सेकेंडरी या कोलेज की शक्षा पूरी होने के तुरंत बाद शुरू होता है। उच्च शक्षा के इस स्तर पर, छात्र कसी भी प्रकार की समस्याओं का

International Journal of Research in Social Sciences

(IJMRA Publications) ISSN: 2249-2496 UGC Approved No 48887

Publication Certificate

Paper entitled

कोलेज के छात्रों के बीच बड़े पांच व्यक्तित्व और स्वास्थ्य की मुखरता का अध्ययन

Author

Dr. Vineta, Assistant Professor Department of Psychology, Ismail National Mahila P.G College Meerut.

Published in

International Journal of Research in Social Sciences ISSN: 2249-2496

In Volume 11 Issue 10 October 2021 with Impact factor 7.081 UGC Approved Journal No 48887

2249-2496

Managing Edit
www.ijmra.
Email: editorijmie@gmail.co

Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

Mrs. Anchal Singh

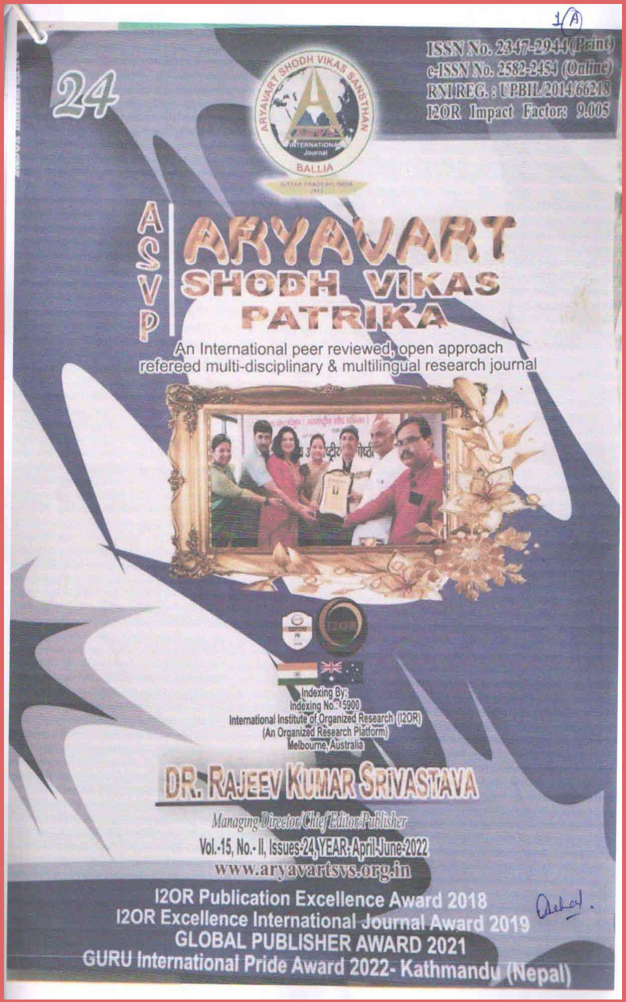

1(B)

42. प्रागैतिहासिक चित्रों की विषयवस्तु का विवेचनात्मक अध्ययन 170–174
–1. नीरज कुमार मौर्य 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
43. सामाजिक परिवर्तनों से प्रभावित कला स्वरूपों का अध्ययन 175–177
–1. मूल चन्द वर्मा 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
44. आत्मनिर्भर भारत में हस्तशिल्प कलाओं का योगदान (एक अध्ययन) 178–180
–1. निशि 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
45. जनसंख्या, संसाधन और विकास 181–183
–डॉ0 भोलेन्द्र प्रताप सिंह, गाजीपुर (उ0प्र0)
46. लोक संस्कृति में लोक कला धरोहर के विभिन्न रूप 184–189
–श्रीमती आंचल सिंह 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
47. प्रव्रजन के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य 190–193
–डॉ0 मनीष कुमार पाण्डेय, गोरखपुर (उ0प्र0)
48. भारतीय ग्रामीण समाज में भारत अभियान कि चुनौतियाँ 194–196
–डॉ0 ज्योति गुप्ता, प्रतापगढ़ (उ0प्र0)
49. अजन्ता गुफाओं में कला विषयों की विविधता 197–199
–1. दिव्यांशी 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
50. धूमिल की कविताओं में व्यंग्य चित्रण 200–204
–डॉ0 रोहिनी पण्डित, मदुरई (तमिलनाडु)
51. समकालीन कला में बढ़ता बाजारवाद 205–207
–1. सोनिया 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
52. छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता और 'स्वदेश' 208–211
–डॉ0 निमिषा सिंह, गोरखपुर (उ0प्र0)
53. संचार माध्यमः स्वरूप एवं तात्त्विक विश्लेषण 212–216
–डॉ0 यामिनी राय, गोरखपुर (उ0प्र0)
54. भारतीय लोक कला – प्राचीन परम्परा से आज तक 217–221
–1. मुश्ताक अली 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
55. ग्राफिक डिजाइन और विज्ञापन का विश्लेषणात्मक अध्ययन 222–225
–1. प्रतिभा 2. डॉ0 अलका तिवारी, मेरठ (उ0प्र0)
56. दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास में शिक्षक व परिवार की भूमिका 226–228
–अमिता मिश्रा, चित्रकूट (उ0प्र0)
57. भारत वर्ष में प्राथमिक शिक्षा के लोक व्यापीकरण की आवश्यकता, प्रयास, समस्या एवं सुझाव 229–234
–प्रतिमा खरे, झांसी (उ0प्र0)
58. समन्वित क्षेत्रीय विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका 235–236
–डॉ0 संजू चतुर्वेदी, बलिया (उ0प्र0)
59. ग्रामीण भारत में ऊर्जा आत्मनिर्भरता एवं समावेशी विकास 237–239
–डॉ0 शशिबाला, वाराणसी (उ0प्र0)
60. पं0 दीन दयाल जी का शिक्षा दर्शन 240–243
–डॉ0 रामकृष्ण उपाध्याय, बलिया (उ0प्र0)
61. प्रकृति और संगीत 244–247
–डॉ0 बृजरानी शर्मा, अलीगढ (उ0प्र0)
62. संजीव के कहानी साहित्य का मार्क्सवादी चिंतन 248–249
–1. बनकर संतोष महादेव 2. प्रो0 डॉ0 सदानंद भोसले, पुणे (महाराष्ट्र)

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 184-189
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

लोक संस्कृति में लोक कला धरोहर के विभिन्न रूप

1. श्रीमती आंचल सिंह
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. असि0 प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, आई.एन.एम. पी.जी. कॉलेज, 2. एसो0 प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, एन0 ए0 एस0 कालेज, मेरठ & समन्वयक– ललित कला विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-20.06.2022, Revised-25.06.2022, Accepted-29.06.2022 E-mail: aanchalveer28@gmail.com

सारांशः– *भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीनतम एवं समृद्ध संस्कृति है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय के साथ नष्ट होती रही है, किन्तु भारतीय संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ निरन्तर बनी हुई है। इसने अन्य संस्कृतियों के गुणों को अपने में समाहित तो किया, किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा। हम जानते है कि किसी देश के विकास में वहाँ की कला संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारतीय कला परम्परिक और धार्मिक दोनों हैं। जो समाज का अविभाज्य अंग है। भारतीय लोक कला सम्पूर्ण समाज की धार्मिक भावनाओं का चित्रित इतिहास है, जो मानवता की अमूर्त संस्कृतिक विरासत के रूप में जानी जाती हैं।*

कुंजीभूत शब्द– लोक कला, संस्कृति, संस्कार, धार्मिक, भारतीय संस्कृति, सर्वाधिक प्राचीनतम, परम्परागत अस्तित्व।

भारतीय संस्कृति और कला का आपसी रिश्ता काफी गहरा है। कला के माध्यम से ही संस्कृति हमारे जीवन में अभिव्यक्ति पाती हैं। मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाये गये शैलचित्र, नर्मदा घाटी में की गई खुदाई तथा अन्य पुरातत्वीक प्रमावों से यह सिद्ध हो चुका है कि भारत भूमि आदिमानव की प्राचीनत्म कर्मभूमि रही है। हजारों वर्षो के बाद भी भारतीय संस्कृति अपने मूल स्वरूप में जीवित है। भारत अनेक धर्मो, सम्प्रदायों, मतों और पृथक आस्थाओं एवं विश्वासों का देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप में एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है।

भारतीय कला धर्म से प्रेरित है इसे नकारा भी नहीं जा सकता है। पहले कलाकार धर्माचार्य के निर्देशानुसार कार्य करते रहे होगें, पर स्वयं की अभिव्यक्ति के समय उन्हें जो जैसा दिखायी दिया उसे वैसा ही चित्रित किया। कला के माध्यम से ही पावन दृष्टि को अभिव्यक्त किया गया, जो भौतिक संसार के पीछे छिपे दैव तत्वों से हमें हमेशा अवगत कराती रही हैं। इसी क्रम में जीवन के दैनिक क्रिया –कलापों के बीच उसके पूजा–पाठ, उत्सव, पर्व त्यौहार, शादी–विवाद या अन्य घटनाओं से विभिन्न लोक कलाओं से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। इसलिए भारतीय कला की चर्चा तब तक अपूर्ण मानी जायेगी, जब तक की उसमें लोक कला के पक्षों को शामिल न किया जाये।

वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में विकास एवं परिवर्तित मूल्यों को अपनाते हुए आधुनिक भारतीय समाज धार्मिक संस्कारों से अपरिचित सा होता जा रहा है, जबकि अपनी संस्कृति की गरिमा को सुरक्षित रखने तथा विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाये रखने के लिए अपने स्वर्णिम अतीत को जानना अत्यन्त आवश्यक है। अतः पूर्व में प्रचलित धार्मिक संस्कारों संबंधी ज्ञान को लोक कला संस्कृति के माध्यम से आज भी संकलित सुरक्षित एवं जीवित है। वर्तमान परिदृश्य में विदेशों में भी इन धार्मिक संस्कारों के प्रति अनुराग है। बदलते परिवेश में भी भारतीय लोक कला संस्कृति के गरिमामयी धार्मिक संस्कारों ने विश्व को आकर्षित किया है।

शोध–पत्र का उद्देश्य– लोक देवी–देवता का भारतीय समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। लोक कला संस्कृति का एक रूप हमें भावमिव्यक्तियों की शैली में भी मिलता है, जिसके द्वारा लोक मानस का मांगलिक भावना से ओत–प्रोत होना सिद्ध करता है। लोक जीवन की जैसी सरलता, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोक कला में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ हैं। लोक जीवन में पग–पग पर धार्मिक संस्कारों के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य भारतीय लोक कला संस्कृति में धर्म के योगदान पर प्रकाश डालना है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी परम्पराओं की अवहेलना करते हुए भारतीय लोक कला संस्कृति तथा धार्मिक संस्कारों से दूर होते जा रहे है। यह सत्य है कि आज हम पूर्णरूपेण उन संस्कारों का अनुपालन नहीं कर सकते, किन्तु उनमें छिपी भावनाओं को अपनाकर संक्षेप में ही सही अपनी लोक कला संस्कृति के धार्मिक संस्कारों को विलुप्त होने से बचा सकते हैं।

लोक कला संस्कृति– लोक शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है एक ओर तो यह शब्द अपने में विश्व अथवा समाज को समेटे हुये है वही दूसरी ओर यह जन सामान्य के अर्थ का भी द्योतक है। हमारा ग्रामीण समाज लोक का महाप्राण है और ग्रामीण संस्कृति लोक का प्रतिनिधित्व करती है। वास्तव में लोक का अर्थ उस जन समाज से है जो विस्तृत रूप से पृथ्वी के भूभाग में फैला हुआ है और जिसमें सभी प्रकार के मनुष्य सम्मिलित है। वास्तव में देखा जाये तो "लोक" शब्द अपने प्रयोग के आधार पर अलग–अलग अर्थ देता है। जैसे यदि लोक के साथ कला, संस्कृति, संस्कार आदि शब्द को लगा दे तो एक दम वैसा ही दृश्य हमारी आंखों के सामने घूमने लगता है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

Ms. Suman Mishra

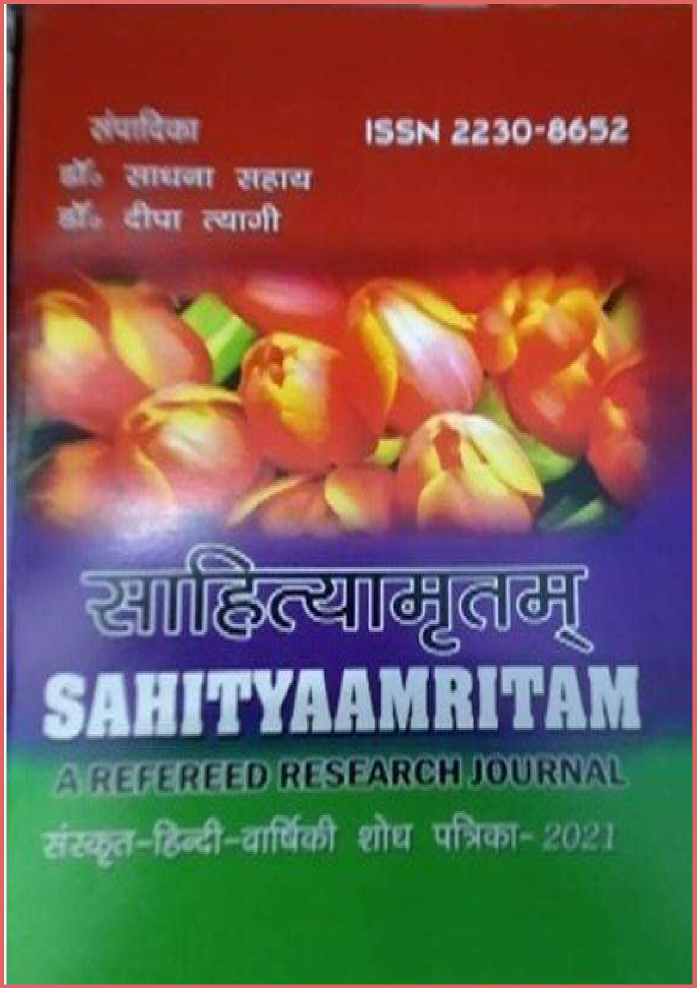

अनुक्रमणिका

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में स्त्री-विमर्श — 1
डॉ० गीता शर्मा

2. श्रीमद्भगवद्गीतायां वर्णितस्य भक्तियोगस्य स्वरूपं महात्म्यञ्च — 9
डॉ० उमा शर्मा एवं श्री लक्ष्मण सिंह

3. हिन्दी कथा साहित्य में थर्ड जेंडर की व्यथा कथा — 16
डॉ० विवेक कुमार त्रिपाठी एवं डॉ0 क्रांति बोध

4. यशपाल के उपन्यासों में स्वाधीनता के स्वर — 24
डॉ० गीता शर्मा एवं साधना यादव-शोध छात्रा

5. नागार्जुन की नारी चेतना : उपन्यासों के संदर्भ में — 29
डॉ० शिवम् चतुर्वेदी एवं वीणा शर्मा

6. तुलसी का काव्योत्कर्ष — 39
डॉ0 मधु शर्मा

7. स्त्री विमर्शः विविध आयाम — 47
डॉ० गीता पाण्डे

8. महानगरों के मध्यवर्गीय समाज में बदलते रिश्तों का यथार्थ चित्रण (क्षमा शर्मा कृत कहानी संग्रह 'बात अभी खत्म नहीं हुई' के विशेष संदर्भ में) — 53
डॉ० सुमन मिश्रा

9. मेघदूत में वर्णित संवेदनात्मक तत्त्व — 66
डॉ० शुचि अग्रवाल

8

महानगरों के मध्यवर्गीय समाज में बदलते रिश्तों का यथार्थ चित्रण, (क्षमा शर्मा कृत कहानी संग्रह 'बात अभी खत्म नहीं हुई' के विशेष संदर्भ में)

डॉ० सुमन मिश्रा,
असि० प्रो० (हिन्दी विभाग)
इस्माईल नेशनल महिला पीजी कॉलिज,मेरठ

शोध-सार

इक्कीसवीं सदी का प्रथम और दूसरा दशक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आया है भारत के महानगरीय समाज में तीव्र परिवर्तन के साथ ही उथल-पुथल की स्थितियाँ देखी जा रही हैं इन दशकों में सूचना तकनीकी के क्षेत्र में भारी क्रांति आयी है। इन क्रांतिकारी परिवर्तनों और तकनीकी के तीव्र प्रसार ने मानवीय रिश्तों के ताने-बाने को तोड़कर रख दिया है जिसके परिणामस्वरूप महानगरों का मध्यवर्गीय समाज सर्वाधिक प्रभावित हुआ है। क्षमा शर्मा जी ने अपने कहानी संग्रह 'बात अभी खत्म नहीं हुई' में महानगरीय समाज के मध्यवर्गीय रिश्तों में होने वाले बदलावों का सूक्ष्म अंकन हुआ हैं इनकी कहानियों का केन्द्र मुख्य रूप से महानगरीय समाज का मध्यम वर्ग होता है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है क्योंकि संपूर्ण जगत में रहने वाले मानव की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम साहित्य ही है साहित्यकार समाज का जागरुक प्रहरी होता है और समाज की समस्याओं जैसे नारी-पीडा नारी चेतना शोषितों वंचितों की व्यथा, संघर्ष आशा-निराशा और नए यथार्थ को आत्मसात कर स्वाभाविक चित्रण करना ही उसका सामाजिक दायित्व होता है। साहित्यकार समाज के बदलते हुए स्वरूप पर पारखी दृष्टि रखता है, समाज में क्षणिक परिवर्तन भी साहित्यकार को प्रभावित करते हैं। वर्तमान समाज की समस्याओं का अतीत की समस्याओं से तुलना कर वह वर्तमान समाज का यथार्थ मूल्यांकन करता है। उसके अमूल्य साहित्य को पढ़कर आने वाली पीढ़ियों का जीवन सरल हो जाता है।

Dr. Swarna

RABINDRA BHARATI JOURNAL
OF
PHILOSOPHY

52

Vol - XXIII, No. 16 : 2022
ISSN No. 0973 - 0087

Department of Philosophy
Rabindra Bharati University
56 A, Barrackpur Trunk Road, Kolkata - 700 05

S

THE PRISM FOR TRANSGENDERS: ARUNDHATI ROY'S "THE MINISTRY OF UTMOST HAPPINESS"

Dr. Swarna, Assistant Professor and Head, Department of English, Ismail National Mahila PG College, Meerut
Ms. Ridhima Narayan, Research Scholar, Department of English, Ismail National Mahila PG college, C.C.S. Univ. , Meerut : Ridhimanarayan78@gmail.com

Abstract

To discuss and analyze lesbian, gay and transgender texts is a challenging task as the material and literature review at instances cannot solidify the study. The transgender operations were only made possible after the 1950's with the development in science and medical in particular; but before that we have numerous accounts in literary works and otherwise of gender transformation imaginatively, symbolically and metaphorically. In the novel the 'Others' populate the narrative, including hijras, political rebels, the destitute, women who refuse to "know their place," and abandoned infant girls. The plot of Roy's political romance depicts these individuals carving out new places for themselves, breaking tradition, experimenting with possible new lifestyles, and experimenting with new role. The present paper attempts to study Arundhati Roy's *The Ministry of Utmost Happiness* in the light of queer and transgender studies with reference to androgynous characteristics. Roy represents the third gender as an objective observer of the instability taking place around us.

Keywords: Transgender studies, LGBTQ, Queer theory, Transsexuality, Oppression

Arundhati Roy is an irreverent author and so are her works; complex characters and luscious prose in a diversified contemporary setting is a jewel her works develops into. The symptoms of marginalization and queerness are magnified in her texts exponentially and irreversibly.

Sexual orientation personality and sexual introduction are distinctive features of character. Everybody features a sexual orientation personality and a sexual introduction, but a person's sex does not decide a person's sexual introduction. Transgender individuals may recognize as hetero, gay person, androgynous, or none of the above.

'At magic hour, when the sun has gone but the light has not armies of flying foxes unhinge themselves from the Banyan trees in the old graveyard and drift across the city like smoke....'

The narrative is similar to her earlier fiction *The God of Small Things* 1997, her Man-Booker work; a marginalized group of individuals who are victims of injustice, unfairness, and prejudices. It also traces the unavoidable truths of society such as the wretched situation of minorities, the humiliated life of trans genders, mediocre government, the life of naxals, rape, and murder.

She romanticizes the sufferings and allows readers to decipher the realist approaches to the prevailing atrocities. She raises question to the odd ways of Indian thinking in *The God of Small Things* Roy adds-

"They all broke rules. They all crossed into forbidden territory. They all tampered with laws that lay down who should be loved and how and How much."

The text discusses the political as well as social plights of transgender in multicultural and democratic nation. How the irony of globalization marginalizes one community. The need to articulate new subjectivization of the self that truly expresses the reality of transgender crises. Despite arguments about the slight variations between words referring to Gender and Sexuality, transgender is included in the wide category of "Queer." Although the discipline was founded by Michel Foucault, Gayle Rubin, Eve Kosofsky Sedgwick, and Judith Butler, the term queer, often referred to as transgender's evil twin, was

Dr. Swarna

Executive Editors

Sanjuka Basu
Kuntala Bhattacharya

Editorial Board

Professor Sabyasachi Basu Ray Chowdhury,
Hon'ble Vice-Chancellor, Rabindra Bharati University
Roma Chakraborty,
Former Professor, Department of Philosophy, CU
Rupa Bandyopadhyay,
Professor, Department of Philosophy, JU
Nirmalya Narayan Chakraborty
Sarbani Banerjee
Pritha Ghosh
Sonreng Koireng
Mausumi Das
Bijoy Saradar

Published By

The Registrar, Rabindra Bharati University,
56A, B.T. Road Kolkata: 700050

Printed By :

AKC Imagine Printing Press, Naihati, 24 Pgs (N)

Submit articles / send queries through E-Mail:
editor.joprbu@gmail.com

5 A

List of Content

S.No.	Title of Article
1	NEED FOR IMPROVEMENT IN LISTENING SKILLS IN ELT
2	LUNG DISEASE DETECTION USING DEEP LEARNING
3	THE PRISM FOR TRANSGENDERS: ARUNDHATI ROY'S "THE MINISTRY OF UTMOST HAPPINESS"
4	DETERMINANTS OF BAD LOANS OF COMMERCIAL BANKS IN INDIA
5	RESOURCES STATUS AND ATTITUDE OF STUDENTS TOWARDS SCIENCE EDUCATION OF HIGHER SECONDARY SCHOOLS IN MANIPUR
6	SPACE TOURISM- CURRENT SITUATION AND ISSUES IN INDIA
7	RED SANDAL SMUGGLING, A DISGRACE TO SOCIETY- AN OVERVIEW
8	A STUDY ON EMOTIONAL INTELLIGENCE AND STUDY HABIT OF SECON SCHOOL STUDENTS IN KOHIMA DISTRICT OF NAGALAND
9	DETERMINING FUTURE TRAVELLING BEHAVIOR IN INDIA AFTER COVI PANDEMIC: AN EXPLORATORY FACTOR ANALYSIS
10	MENTAL HEALTH AS PREDICTOR OF EMOTIONAL INTELLIGENCE OF COLLEGE STUDENTS
11	CLIMATE CHANGE AGENDA AND ACTION - AN INDIAN PERSPECTIVE
12	SPIRITUAL INTELLIGENCE AND TEACHER EFFECTIVENESS
13	A STUDY ON THE IMPACT OF THE SKILL TRAINING ON THE PSYCHOS WELL BEING OF THE WIVES OF THE INDIAN MILITARY PERSONNEL
14	EMOTIONAL INTELLIGENCE: A CHANGING MODE OF BEHAVIOR CO CHALLENGES FOR ACADEMICS NOW BECOME AN EFFECTIVE TOOL LEARNING.
15	DEMANDS OF THE NEW E-MARKETPLACE
16	INDIA CHINA RELATIONS AFTER GALWAN
17	WORK-LIFE BALANCE IN THE NEW NORMAL
18	IMPACT OF COVID-19 ON ENVIRONMENT

Dr. Swarna

RABINDRA BHARATI
JOURNAL OF PHILOSOPHY

UGC CARE Group I Journal
ISSN No: 09730087

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

THE PRISM FOR TRANSGENDERS: ARUNDHATI ROY'S "THE MINISTRY OF UTMOST HAPPINESS"

Authored By

Dr. Swarna
Assistant Professor and Head Department of English Ismail National Mahila P.G. College Meerut

Published in

Department of Philosophy: Rabindra Bharati University

ISSN : 0973-0087

Vol. : XXIII, No:16, 2022

UGC CARE Approved, Peer Reviewed and Referred Journal

Editor
Sarbani Banerjee
Head, Dept. of Philosophy

Smt. Meenu Sharma

Impact Factor: 7.86 ISSN: 0976- 8165

THE CRITERION

An International Journal in English

13th Year of Open Access

Bi-Monthly Refereed and Peer-Reviewed Open Access e-Journal

Vol.-13, Issue- I (February 2022)

Editor-In-Chief: Dr Vishwanath Bite

Managing Editor: Dr Madhuri Bite

Visit the Website: www.the-criterion.com

AboutUs: http://www.the-criterion.com/about/

Archive: http://www.the-criterion.com/archive/

ContactUs: http://www.the-criterion.com/contact/

EditorialBoard: http://www.the-criterion.com/editorial-board/

Submission: http://www.the-criterion.com/submission/

FAQ: http://www.the-criterion.com/fa/

ISSN 2278-9529
Galaxy: International Multidisciplinary Research Journal
www.galaxyimrj.com

Designing Multimodal Text: A Constructive Approach of Studying Literature

Meenu Sharma
Assistant Professor,
Dept. of English,
Ismail national Mahila PG College,
Meerut, Uttar Pradesh.

Article History: Submitted-29/01/2022, Revised-14/02/2022, Accepted-15/02/2022, Published-28/02/2022.

Abstract:

Visuals and multimodal texts, as well as our daily interactions with them, have a substantial impact on our ideologies and perspectives. Literacy is no longer limited to written and printed texts. Despite the fact that the growing importance of digital literacy and multimodal learning necessitates numerous structural changes from pre-existing paradigms, the emergence of covid-19 prompted the adoption of a multitude of constructive approaches to redesigning teaching and learning in the digital format. The ongoing study focuses on the various syntactic affordances of digitalization specifically in English Literature and how instructors and students harness them to create multimodal texts. The pandemic scenario enabled teachers and students in varying degrees in obtaining multimodal literacy and offering a constructive approach to considering the nature of meaning-making in the digital information age. This article highlights the ability of teachers to generate possibilities for enhanced and more effective learning than before due to the intuitive interfaces of multimodal texts and technology. The study also presented students as participatory architects of multimodal texts as well as learning due to exposure to innovative modes and media.

Keywords: Multimodal learning, semiotic modes, digitalization, Pandemic, Media.

Introduction:

In today's society, individuals engage with one another in a multitude of ways, whether it be the tweets from politicians proclaiming national policy or photographs on Instagram and Snapchat from a pre-teen adolescent. As a result, the growing importance of digital literacy and multimodal learning in both formal and informal contexts is underscored by the increasing advancement of information and communication technology in our lives and its significant impact on the communication context. (Chan et al. 2017; Jewitt 2008; Kress and van Leeuwen

Smt. Meenu Sharma

CERTIFICATE

of Publication

www.the-criterion.com

THIS CERTIFICATE IS PRESENTED TO

MEENU SHARMA

For the scholarly research paper entitled

"Designing Multimodal Text: A Constructive Approach of Studying Literature"

Published in **The Criterion: An International Journal in English**

a bi-monthly peer-reviewed open access eJournal

Vol 13, Issue-I (February 2022).

28/02/2022

DATE

Since 2010

SIGNATURE

Dr. Vishwanath Bite

Editor-In-Chief

Smt. Meenu Sharma

© 2022 IJRAR April 2022, Volume 9, Issue 2 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

God Reimagined In A Post-Apocalyptic World: A Multimodal Reading Of Ramayan 3392ad

[1]Meenu Sharma, [2]Dr.Ramakant Sharma

[1]Assistant Professor, Department of English, Ismail National Mahila PG College, Meerut, Uttar Pradesh, India.

[2] Associate Professor, Department of English, S.S.V. PG College, Hapur, Uttar Pradesh, India.

Abstract: The theoretical and empirical interconnections between mythology and multimodal structures have been abundantly apparent in recent decades. Reimagined in a post-apocalyptic scenario, Ramayan 3392 AD is a graphic novel based on a great South Asian epic originally written by Maharishi Valmiki millennia ago. This article endeavoured to unveil the multimodal structures of graphic novels to emphasize their powerful potential in epic narratives while also exploring the anguish of a future society devastated by nuclear Armageddon. Since the graphic novel depicts time and space in multimodal ways utilizing comic, graphic, and textual semiotic modes, it has become an increasingly popular means to depict serious issues across the world and particularly in South Asia. Driving on the multimodal reading of the retelling of the popular south Asian epic Ramayan, the article strives to present that while advancing endless desires, self-centric culture drives, it evinces climate change and environmental deterioration as well. Moreover, it attempts to demonstrate that through the use of graphic novel format, the current captivating story not only envisions God in a post-apocalyptic setting engraved with an appealing color palette and visual strategy but also verbalizes ecocritical catastrophe and other social issues constructively. In addition, the relevance of multimodal reading in raising social consciousness and interpreting classic stories with metaphorical parallels that provide critical insights is argued in this article.

Index Terms: Multimodal, Post-apocalyptic, Ramayana, Mythology, South Asian epic.Visual narratives

Introduction:

Graphic novels have evolved into a forum for a varied spectrum of individual and societal voices, encompassing many techniques of expression. Kress coined the word "multimodality" to stress that "language is no longer the only or even the central semiotic mode." (153) Multimodality, according to Kress, is defined as "all the modes available and utilized in making meaning, in representation, and in communication" (91). Since comics and graphic novels combine both graphic and text manifestation in their storytelling, interaction with these texts is referred to as "multimodal literacy", Kress, and Jewitt defined in their book of the same name. However, superheroes, women, and Jewish trauma narratives in graphic novels are the first choices of researchers but the last two-decade saw an upsurge in visual interpretations of myth and research related to its interpretations. As claimed by Joseph Campbell in an interview, myths "put you in touch with a plane of reference that goes past your mind and into your very being, into your very gut," also stating later that there are four purposes of myth: mystical, cosmological, sociological, and pedagogical (Campbell). The graphic novel creates a new medium for literacy because it fuses art and text, the visual and the verbal (Bucher and Manning). This combination of the verbal and visual, what Kress refers to as a "multimodal ensemble," requires readers to approach a comic or graphic novel differently than they would a printed word-only text. The present study projects the multimodal analysis of the visual representations of the classical epic Ramayana. The paper will begin with a historical overview of graphic novels and mythology and their interactions with each other in contemporary times. Then, the study will apply the parameters of multimodal study to drawing on both textual discourse and social theories in the given text and the dynamics of textual, discourse, and social practices emerging from the graphic novels. As Yang confirms, "By combining image and text, graphic novels bridge the gap between media we watch and media we read" (p. 187).

Certificate of Publication

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

Meenu Sharma

In recognition of the publication of the paper entitled

GOD REIMAGINED IN POST-APOCALYPTIC WORLD: A MULTIMODAL READING OF RAMAYANA 3392AD

Published In IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved - Journal No : 43602 & 7.17 Impact Factor

Volume 9 Issue 2 April 2022, Date of Publication: 07-April-2022

PAPER ID : IJRAR22B1149

Registration ID : 245309

R.B.Joshi

EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool) , Multidisciplinary, Monthly Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.ijrar.org | Email: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

Manage By: IJPUBLICATION Website: www.ijrar.org | Email ID: editor@ijrar.org

IJRAR | E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

Dr. Mamta Singh

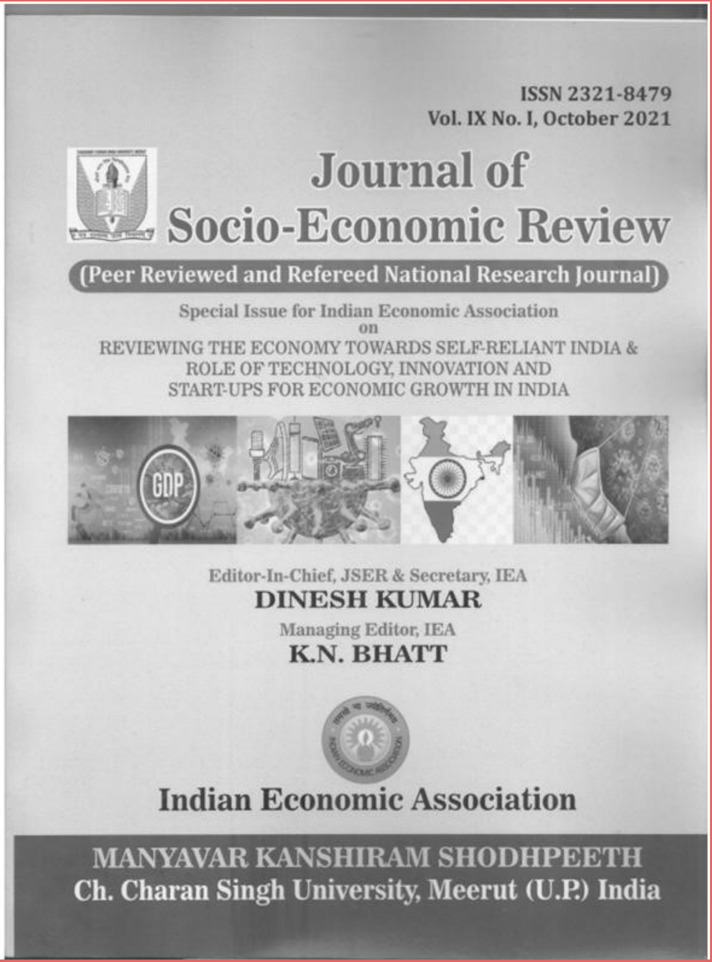

ISSN 2321-8479
Vol. IX No. I, October 2021

Journal of Socio-Economic Review

(Peer Reviewed and Refereed National Research Journal)

Special Issue for Indian Economic Association
on
REVIEWING THE ECONOMY TOWARDS SELF-RELIANT INDIA & ROLE OF TECHNOLOGY, INNOVATION AND START-UPS FOR ECONOMIC GROWTH IN INDIA

Editor-In-Chief, JSER & Secretary, IEA
DINESH KUMAR
Managing Editor, IEA
K.N. BHATT

Indian Economic Association

MANYAVAR KANSHIRAM SHODHPEETH
Ch. Charan Singh University, Meerut (U.P.) India

CONTENTS

Vol. IX No. I, October 2021
(Peer Reviewed National Journal)

S. No.	Research Paper/Author	Page No.
1.	Health Concerns of the Invisible Workers Engaged in Unorganized Sector Chhaya Teotia	01-07
2.	Problems and Prospects of Tourism in Rajasthan Mahmood Alam	08-14
3.	MSMEs as Economic Growth Driver- A Paradigm Shift In Economic Strategy & Banking Sector Reforms Madhuri Rozal	15-27
4.	MSME Sector and Covid – 19: Strength, Challenges and Opportunities Shristi Purwar, Jagdish Narayan	28-34
5.	Trends of Female Participation in Indian Economy: A Critical Evaluation Dinesh kumar, Ruby	25-46
6.	Salient Features of Manchanabele Medium Irrigation Project Ramachandra Nagi Reddy	47-52
7.	कोविड19 एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई की भूमिका Mamta Singh, Kavita Garg	53-62
8.	Performance of MSMEs in India and its issues Suchitra.S, Marutesh	63-71
9.	India's Look East Policy: A Case of India Myanmar Bilateral trade Manesh Choubey	72-79
10.	E-Banking Services and Bankers' Perspective- An Empirical Study in Punjab R.K. Uppal	80-96
11.	Challenges of Higher Education in India P. Thiagarajan	97-114
12.	Socio-Economic Impact of Covid-19 Pandemic On Pravasi Workers N. Maruti Rao	115-125
13.	ग्रामीण विकास के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत अभियान की प्रासंगिकता अनिल ठाकुर	126-129
14.	Effect of COVID-19 on Uttar Pradesh Tourism Akanksha Singh, Pooja Sahu	130-140

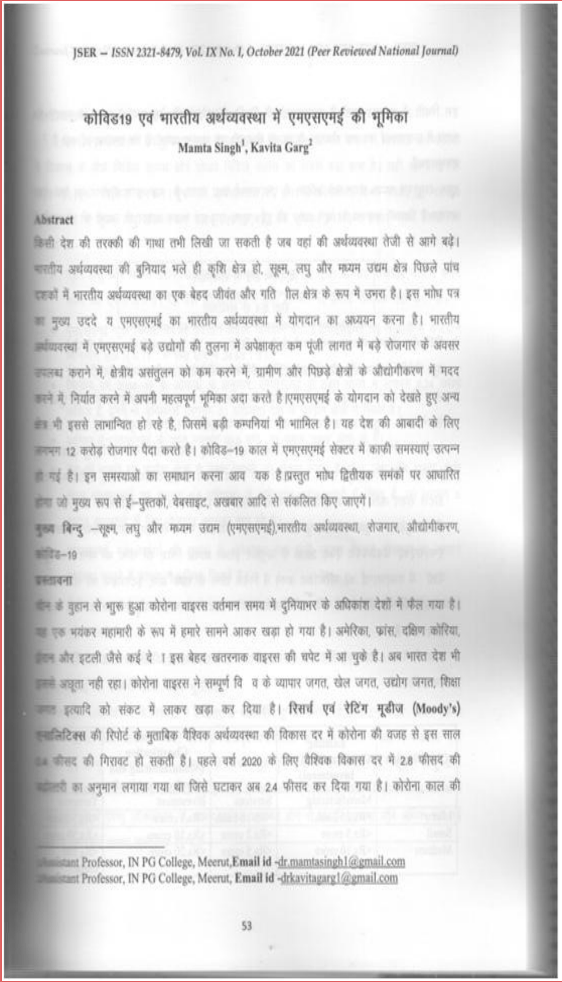

कोविड19 एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई की भूमिका

Mamta Singh[1], Kavita Garg[2]

Abstract

किसी देश की तरक्की की गाथा तभी लिखी जा सकती है जब वहां की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़े। भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद भले ही कृशि क्षेत्र हो, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र पिछले पांच दशकों मे भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बेहद जीवंत और गति ाील क्षेत्र के रूप मे उभरा है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्दे य एमएसएमई का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान का अध्ययन करना है। भारतीय अर्थव्यवस्था मे एमएसएमई बड़े उद्योगों की तुलना में अपेक्षाकृत कम पूंजी लागत मे बड़े रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में, क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने में, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगीकरण मे मदद करने में, निर्यात करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।एमएसएमई के योगदान को देखते हुए अन्य क्षेत्र भी इससे लाभान्वित हो रहे है, जिसमें बड़ी कम्पनियां भी भामिल है। यह देश की आबादी के लिए लगभग 12 करोड़ रोजगार पैदा करते है। कोविड–19 काल मे एमएसएमई सेक्टर में काफी समस्याएं उत्पन्न हो गई है। इन समस्याओ का समाधान करना आव यक है।प्रस्तुत शोध द्वितीयक समंकों पर आधारित होगा जो मुख्य रूप से ई–पुस्तकों, वेबसाइट, अखबार आदि से संकलित किए जाएगें।

मुख्य बिन्दु –सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई),भारतीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, औद्योगीकरण, कोविड–19

प्रस्तावना

चीन के वुहान से शुरू हुआ कोरोना वाइरस वर्तमान समय में दुनियाभर के अधिकांश देशो मे फैल गया है। यह एक भयंकर महामारी के रूप में हमारे सामने आकर खड़ा हो गया है। अमेरिका, फ्रांस, दक्षिण कोरिया, ईरान और इटली जैसे कई दे ा इस बेहद खतरनाक वाइरस की चपेट में आ चुके है। अब भारत देश भी इससे अछूता नही रहा। कोरोना वाइरस ने सम्पूर्ण वि व के व्यापार जगत, खेल जगत, उद्योग जगत, शिक्षा जगत इत्यादि को संकट मे लाकर खड़ा कर दिया है। **रिसर्च एवं रेटिंग मूडीज (Moody's) एनालिटिक्स** की रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक अर्थव्यवस्था की विकास दर में कोरोना की वजह से इस साल 0.4 फीसद की गिरावट हो सकती है। पहले वर्श 2020 के लिए वैश्विक विकास दर में 2.8 फीसद की बढ़ोतरी का अनुमान लगाया गया था जिसे घटाकर अब 2.4 फीसद कर दिया गया है। कोरोना काल की

[1]Assistant Professor, IN PG College, Meerut, **Email id** -dr.mamtasingh1@gmail.com
[2]Assistant Professor, IN PG College, Meerut, **Email id** -drkavitagarg1@gmail.com

Dr. Mamta Singh

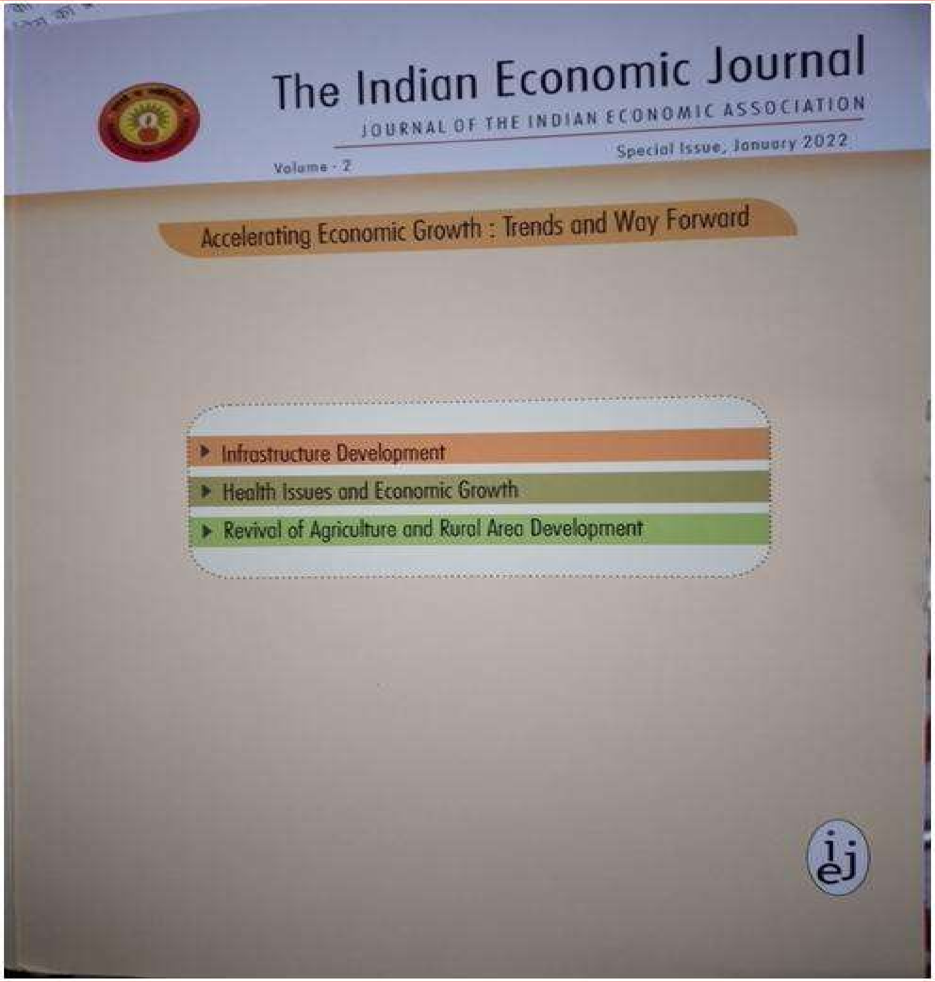

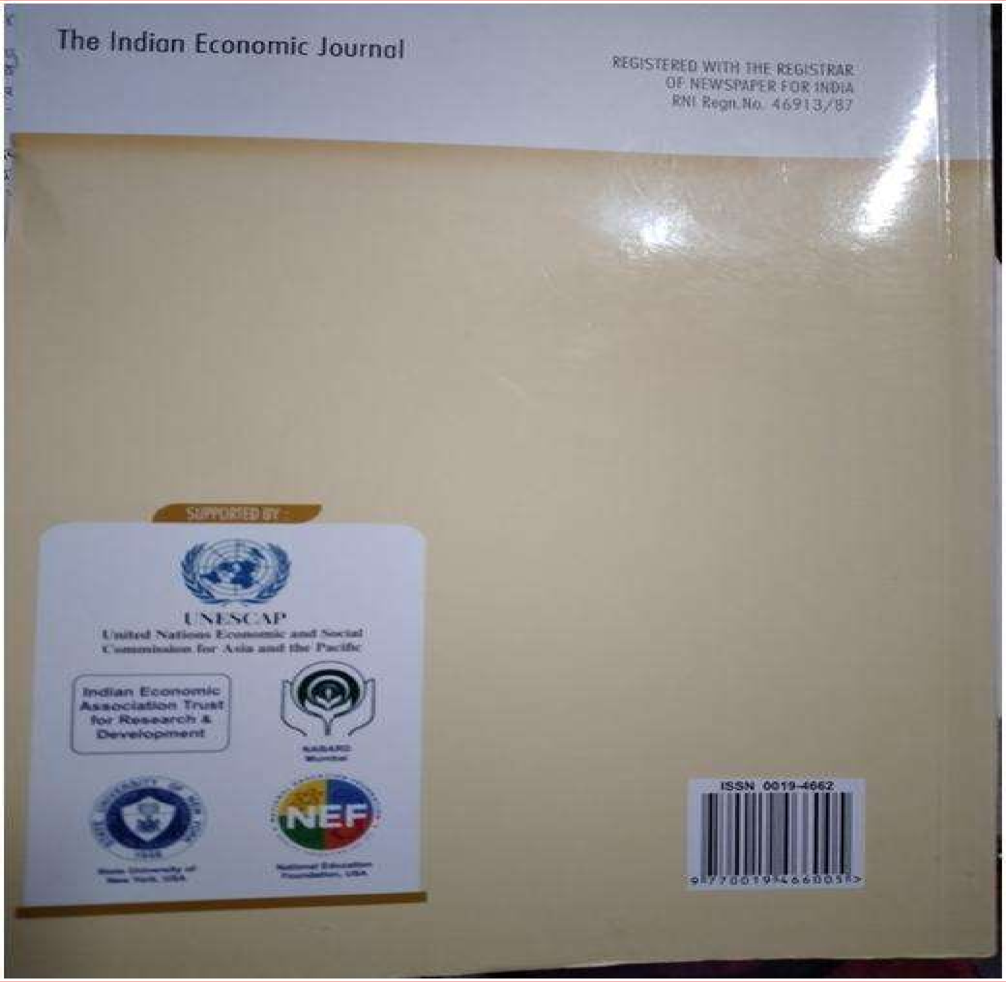

Dr. Mamta Singh

107. **Impact of Migrated Labour in India During Lockdown Periods due to COVID-19**
Suvranshu Pan.. 1238

108. **Disparities in economic Development: an agricultural view in the aftermath of COVID-19 in India**
Rituraj.. 1248

109. **Reviving Indian Economy in the aftermath of COVID-19**
Anita Das... 1255

110. **The Atma-Nirbhar Bharat Abhiyan and Vocal for Local in Promoting Handicraft Sector**
G.M. Dubey1, Pooja sahu
Harisingh Gour Vishwavidyalaya.... 1259

111. **Promoting the Entrepreneurship : Analyzing Role of DIC's in Chhatarpur District, MP**
Prabal Kumar Dwivedi
Deepshikha Sonker.......................... 1269

112. **Post Effects of Covid-19 on Legacy of Rising Poverty and Widening Income Inequality in India**
Dolly Singh
Girish Mohan Dubey...................... 1279

113. **Study on Socio-Economic Conditions of Agricultural Labour**
Sunil Kumar.................................. 1295

114. **Revival of Agriculture and Rural Area Development In India**
Sashi Kumari
Rakesh Kumar Singh.................... 1303

115. **"Impact- Factor" And Consumer Behaviour: A Study After Covid-19**
Sapna Jain
Mamta Singh.............................. 1310

116. **Impact of Economic Growth and Money Supply on Employment: An Analysis**
Suman Radhika
R.K.P. Raman.............................. 1319

117. **A Gender Based Analysis on Buying Behavior towards e-Pharmacies in National Capital Region**
Dhiresh Kulshrestha
Sumit Agarwal
Abhishek Anand.......................... 1326

118. **Co-operative Banks in India, Problems and its Solutions**
Ambrish Kumar Jha...................... 1337

119. **Kisan Credit Cards (KCC) and its Impacts on Small and Marginal Farmers of India**
Vivek singh
Ratan Lal..................................... 1341

120. **Technological Transformation and Progress of Agricultural Development In Tamil Nadu - A Theoretical Review**
G. Yoganandham.......................... 1351

"Impact- Factor" And Consumer Behaviour: A Study After Covid-19

Sapna Jain[1]
Mamta Singh[2]

ABSTRACT

Don't estimate a creature by its appearances and size as it may be useful as well as dangerous to any extent. This old saying by our forefathers has been proved true by the noval corona virus – which is so small in size that can't be seen with our naked eyes. This small fellow has shaken the whole world. Even the largest and strongest economies could not be spared from the sting of this microscopic virus. India is not an exception. The first COVID-19 infection was observed on 12th December ,2019, in Wuhan(in China). WHO declared it a pandemic on 11th March, 2020. In India it was recognised on the day (22March,2020)with the declaration of JANATA-CURFEW by our honourable Prime Minister , followed by Lockdown on March 25th, 2020. This was not the end...one day converted into days, days into weeks, weeks into months, months into years.....and now its going to complete almost two years, but its 'havoc' is not about to stop yet. No sooner do we try to come back to normal life, than its new variant appears like DELTA and now again another one ---OMICRON. By December 11, 2021, It has affected around 27 crores of people all over the world, total deaths recorded are more than 53 lacs, and in India around 4,75,000 people died of this deadly disease(worldometers.info/coronavirus). Apart from this it has given mental-stress, fear, panic and depressions. Everyone was scared of the fear that any moment off life could be the last one. In the history of mankind it is the first and foremost disease that has persisted for such a long time. Even after vaccination of more than one crores of people, it's another new variant---OMICRON has knocked at the doors.

Keywords: covid-19, pandemic, Lockdown, persistent, janata-curfew, impact, digital-era, occupational shift, values, leisure, talent, leisure, challenges, infrastructural loss

INTRODUCTION:

Covid–19 knocked at our doors, and Indian government announced the very first lockdown on March 25th, 2020. After the lockdown phases-11, 111, & 1v were extended and we were locked at home. . Researchers are of the view that during first twenty one days of complete LOCKDOWN the Indian economy was expected to lose over Rs. 32,000 crores (US 4.5 billion dollar).[1] According to a report by U.N., India's economy is forecast to contract by 5.9 % in 2020, and gave a warning too that growth may rebound next year but the contractions are going to result in permanent loss of income of the consumers (Source : the Hindu). According to Ministry of Statistics, India's growth in the fourth quarter of 2020 went down to 3.1 %. It released the GDP

[1] Assistant Professor, Dept of Economics, CCSU Meerut Email: sapna28569@gmail.com
[2] Assistant Professor, IN PG College, Meerut

Dr. Soniya Gupta

Scopus

This author profile is generated by Scopus Learn more

Gupta, Soniya

Ismail National Mahila PG College Meerut, Meerut, India Show all author info
57819835400 Connect to ORCID

0 Citations by 0 documents | 3 Co-authors | 0 h-index View h-graph

Set alert | Edit profile | Save to list | Potential author matches | Export to SciVal

Document & citation trends

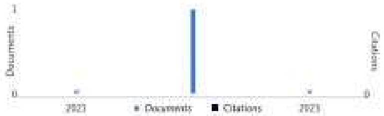

Analyze author output | Citation overview

Most contributed Topics 2017–2021

This author has no topics at the moment. To learn why, or more about topics in general. Learn more about Topics

View all Topics

1 Document | Cited by 0 Documents | 0 Preprints (New) | 3 Co-Authors | 0 Topics | 0 Awarded Grants (Beta)

Export all | Save all to list | Sort by Date (...

View list in search results format

View references

Set document alert

Article • Open access

Two Level Storage Inventory Model with Ramp Type Demand under Inflationary Environment with Partial Backordering

Kumar, V., Garg, S.K., Gupta, S., Sharma, S.K.

Evergreen, 2022, 9(2), pp. 367–377

Show abstract | View at Publisher | Related documents

0 Citations

About Scopus

- What is Scopus
- Content coverage
- Scopus blog
- Scopus API
- Privacy matters

Language

- 日本語版を表示する
- 查看简体中文版本
- 查看繁體中文版本
- Просмотр версии на русском языке

Customer Service

- Help
- Tutorials
- Contact us

ELSEVIER

Terms and conditions | Privacy policy

Copyright © Elsevier B.V, All rights reserved. Scopus® is a registered trademark of Elsevier B.V.

We use cookies to help provide and enhance our service and tailor content. By continuing, you agree to the use of cookies.

RELX

Dr. Soniya Gupta

EVERGREEN Joint Journal of Novel Carbon Resource Sciences & Green Asia Strategy, Vol. 09, Issue 02, pp00-00, June 2022

Two Level Storage Inventory Model with Ramp Type Demand under Inflationary Environment with Partial Backordering

Vineet Kumar[1], Sudesh Kumar Garg[2], Soniya Gupta[3], Sanjay Kumar Sharma[4]
[1]Inderprastha Engineering College, Ghaziabad (India)
[2]G. L. Bajaj Institute of Technology and Management, Greater Noida (India)
[3]Ismail National Mahila PG College, Meerut
[4]Sobhasaria Group of Institutions, Sikar Rajasthan

E-mail: sudeshdsitm@gmail.com

(Received September 16, 2021; Revised June 6, 2022; accepted June 6, 2022).

Abstract: A two level storage inventory model is constructed in this article. It is well known that the demand for seasonal products (such as fur coats) increases at the beginning of the season until a certain period of time and stabilizes into a fixed amount of time for the rest of the season. To store these extra parts for the buyer arrange additional storage space. This model uses a ramp type demand rate, variable deterioration and shortages are partially backlogged using a variable backordering rate. The entire research is conducted in an inflationary environment. The goal of this model is to reduce the system's total average cost. A numerical assessment and sensitivity analysis are used to verify the suggested model's optimal solution.

Keywords: Two-warehouse, ramp type demand rate, partial backlogging, inflation, time varying deterioration.

1. Introduction

The majority of inventory issues are founded on the assumption that you have access to an owned warehouse with infinite storage. In practice, however, because warehouses often have limited storage space, this assumption is untrue. Inventory management purchases a large number of goods all at once when the cost of sourcing products is higher than the cost of inventory, or when a favorable price discount for bulk purchases is available, or when the demand for the product is high. The present owned warehouse (OW), which has limited storage capacity, will be unable to accommodate such a large amount of items. After that, the excess items are stored in a rented warehouse (RW), which is located either far away or close to OW and these items are only sold to clients at OW. The cost of inventories at RW is often higher than at OW. As a result, goods are placed first in OW, followed by excess stock in RW, in order to reduce inventory carrying costs. RW stocks are also cleared first, with stock shifted from RW to OW in a continuous or bulk release pattern. This inventory system is known as a two-storage inventory system.

In supermarkets, when attractive discounts are available for bulk purchases or when the purchase price of goods exceeds other inventory-related costs. The company's management chooses to buy a significant quantity of goods all at once. These goods cannot be housed in a crowded market area's existing storehouse (i.e. OW). In this circumstance, one (often more than one) additional godown (i.e., RW) is hired on a rental basis for the storage of more goods. Hartley[4)] invented the two-warehouse inventory system first. Hartley[4)] provided a basic two-story model, in which the cost of transporting a unit from a rented area (RW) to a warehouse (OW) was not considered. Sarma[8)] gives a two-level storage deterministic inventory model with infinite refilling rate. In this model, he extends the Hartley[4)] model by introducing a transport value. For a linear trend in demand with two levels of storage, Goswami and Chaudhuri[9)] provide an EOQ model. For degrading goods, Bhunia and Maiti[13)] formulated a two-warehouse inventory model with linearly increasing demand over time, shortages were permitted and excess demand was backlogged. Due to the restricted capacity of existing storage Kar et al.[14)] suggested a deterministic inventory model with two level storage facilities over a finite time horizon. Zhou and Yang[16)] gives a two-level storage inventory model with a stock-level dependent demand rate. Hsieh et al.[17)] proposed a two-warehouse deterministic inventory model for degrading goods with shortages by reducing the net present value of the entire cost. Recently, Skouri and Konstantaras[24)] created two warehouse inventory models for decaying commodities with ramp demand rates.

As the list deteriorates in nature, the problem becomes